स्वयंभू नकलीपीठ भूमापीठाधीश्वर स्वयं घोषित नकली शङ्कराचार्य "स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ" और स्वयंभू नकली शङ्कराचार्य "स्वामी राजराजेश्वराश्रम" की शास्त्रार्थ में पराजय

स्वामी
अच्युतानंद तीर्थ जी

स्वामी
राज राजेश्वरआश्रम जी

दण्डी स्वामी श्री गोविन्दानन्द सरस्वती, पम्पाक्षेत्र

सम्पादकः
ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्यानन्दः

बांई ओर- विराजमान पूरी गोवर्धन पीठ
के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानन्द

मध्य में - विराजमान ज्योतिष्पीठ और
द्वारका शारदा पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य

दाहिने ओर- विराजमान श्रृंगेरी पीठ के
जगद्गुरु शंकराचार्य श्री भारती तीर्थ जी

स्वयंभू नकली पीठ भूमापीठाधीश्वर
स्वयं घोषित नकली शङ्कराचार्य
“स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ”
और
स्वयंभू नकली शङ्कराचार्य
“स्वामी राजराजेश्वराश्रम“ की

शास्त्रार्थ में पराजय

सम्पादक -

(ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्यानन्दः)

प्रकाशक :

शारदापीठ, द्वारका जामनगर, सौराष्ट्र

श्री राजराजेश्वरी सेवा मठ, कोन्नगर, हुगली

संस्करण : 1000 प्रति

तिथि : हरितालिका तीज,
भाद्रपद शुक्ल तृतीया 2076
2 सितम्बर, 2019

मुद्रक :

इनोमिडिया क्रियेशनस् प्रा. लि.

सी.जे. 140, साल्ट लेक सिटी

कोलकाता -700 091

फोन : 9830303012

भूमिका

हरिद्वार में जो ब्रह्मचारी सहजानन्द और दन्डी स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती के साथ स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ के शास्त्रार्थ की चर्चा हुई उसमें शास्त्रार्थ का प्रयोजन उत्पथ का आश्रय लेना न था, यह किसी का किसी से व्यक्तिगत विरोध न होकर महानुशासनादि का अभिप्राय स्पष्ट करना ही था । उक्त प्रसंग में अच्युतानन्द के द्वारा हिन्दी भाषा में पत्र दिया गया है । यद्यपि उनकी दी गई सभी उक्तियाँ निस्सार हैं तथापि जो शंकाए उन्होंने उठाई हैं उनके संबंध में स्पष्टीकरण आवश्यक है । अच्युतानन्द इतने समझदार न पहले कभी थे और ना अभी ही हैं कि वे शास्त्रीय या कोई भी तार्किक बात कर सकें किंतु उन्होंने जो प्रश्न उठाए हैं, वह जिन लोगों के दिमाग की उपज है उन लोगों के लिए भी यह प्रकाशन हो रहा है और यह करना आवश्यक है । विचार से पलायन हम लोग नहीं करते हैं । अच्युतानन्द ने विषयान्तर करते हुए अनेकों प्रश्न उठाए हैं, जिनमें – एक आचार्य दो पीठ पर नहीं हो सकते, पीठ में दसनाम संन्यासी का जो विभाग है उसके अनुसार ही आचार्य का भी योगपट्ट हो, पीठों में चार की संख्या अनिवार्य है और परस्पर क्षेत्रों में प्रवेश वर्जित है इत्यादि प्रश्नों का समाधान किया गया है और इसे जनता के समक्ष लाना समयोचित होगा यही प्रकाशन का उद्देश्य है । सर्वप्रथम यह प्रश्न उपस्थित होता है कि – शङ्कराचार्य को पीठ की आवश्यकता ही क्यों पडी ? इसका कारण यह था कि वेदादि शास्त्रों से भटककर लोग सन्मार्ग का त्याग कर अपना लोक–परलोक नष्ट करने में लगे थे । अन्यान्य सम्प्रदायों का प्रामाणिक ग्रन्थ एक ही होता है जबकि सनातनधर्म में विद्या के चतुर्दश स्थान कहे गये हैं ।

पुराणन्याय मीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः,
वेदाःस्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ।।

जिनमें –(१) पुराण अठारह (२) न्याय, वैशेषिक (३) मीमांसा, पूर्व एवं उत्तर (४) धर्मशास्त्र, स्मृतियाँ (५) वेद चार (६) वेदों के छह अंग व्याकरणादि । प्रत्येक सनातनधर्मी को इन चौदह विद्याओं का प्रारम्भ से ही ज्ञान न होने के कारण हमारे सनातनधर्म की परंपरा में आचार्य की आवश्यकता होती है इसलिए आदि शङ्कराचार्य जी ने अपने महानुशासन में लिखा है –

कृते विश्वगुरुर्ब्रह्मा त्रेतायां ऋषिसत्तमः,
द्वापरे व्यास एव स्यात् कलावत्रभवाम्यहम् ।

इसका अर्थ है सतयुग में ब्रह्मा जगद्गुरु होते हैं , त्रेता में वशिष्ठ जी एवं द्वापर में व्यास जगद्गुरु हैं एवं कलियुग में मैं यानि शङ्कराचार्य जी जगद्गुरु हैं । यह वचन उन्होंने शास्त्रों पर विश्वास दृढ करने के लिए दिया है । लेकिन यहाँ पर प्रश्न आता है कि – भगवान् आद्य शङ्कराचार्य

इस धरातल में केवल बत्तीस वर्ष ही रहकर स्वधाम चले गये कलियुग चार लाख बत्तीस हजार वर्ष लंबा है, इस अवधि में शङ्कराचार्य जी की अवस्था अपूर्ण ही है अतः पुनः पाखण्डमत अपना शिर न उठा सकें इसके लिए उन्होंने भारत की चार दिशाओं में चार मठ स्थापित किये और पीठासीन आचार्य को अपना ही स्वरूप बताया । जिस तरह लोक में पुत्र अपने पिता का स्वरूप ही होता है, उसी तरह आचार्य की योग्यता का धारक शिष्य उनका ही स्वरूप होता है ।

यह शाङ्कर चतुर्मठ महन्ती की गद्दी या कोई भौतिक लाभ का पद नहीं है अपितु मनीषियों के द्वारा अभिषेच्य और महानुशासन की योग्यता के धारक संन्यासी का इसमें अधिकार है । महानुशासन में शङ्कराचार्य ने पीठासीन आचार्य की आवश्यक योग्यता का विधान किया एवं अनधिकारी के निग्रह का भी विधान किया । जिस संन्यासी का अभिषेक किया जाय वह आवश्यक रूप से निम्न योग्यताओं का धारक हो –

शुचिर्जितेन्द्रियो वेदवेदाङ्गादि विशारदः
योगज्ञः सर्वशास्त्राणां स मदास्थानमाप्नुयात् ।

पवित्र, जितेन्द्रिय, वेद वेदांगादि विशारद और सभी शास्त्रों का उचित समन्वय कर्ता ही पीठासीन होने का अधिकारी है अन्यथा कोई बलात् पीठारूढ हो जाये तो मनीषियों को उसका निग्रह कर देना चाहिए । "**अन्यथारूढ पीठोऽपि निग्रहार्हो मनीषिणाम्**" । प्रश्न यह है कि मनीषी कौन है ? मनीषी शब्द पर विचार करना आवश्यक है । यदि कोई विद्वान मीमांसक हो वेद वेदांग पारगामी भी हो किंतु उपनिषदों के द्वारा प्रतिपादित अद्वैत सिद्धान्त का अनुयायी न हो तो क्या वह शाङ्कर पीठों के आचार्य के निर्णायक मंडल का सदस्य हो सकता है ?

बहुत से ऐसे विद्वान हैं जो वेद वेदांग पढे हैं और बौद्धधर्म को मानते हैं क्या उनको मनीषी कहा जा सकता है ? या किसी न्यायाधीश जो संस्कृत से अनभिज्ञ है उनको मनीषी कहा जाएगा ? यहाँ तो जो परंपरा से प्राप्त अद्वैत सिद्धान्त का अनुपालन करता है वही मनीषी शब्द का अर्थ है । इस सम्बन्ध में सर्वज्ञात्म मुनि का श्लोक है –

वक्तारमासाद्य यमेव नित्या सरस्वती स्वार्थ समन्वितासीत् ।
तनिरस्त्दुस्तर्ककलंकपङ्का नमामि तं शङ्करमर्चितांघ्रिम ।

सर्वज्ञात्म मुनि ने अपने ग्रंथ के मङ्गलाचरण में कहा – जिस वक्ता को प्राप्त कर वेदलक्षणा सरस्वती स्वार्थ समन्विता हुई । तो इसका अर्थ है जैसा वेद की परिभाषा है "**मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्**" । मन्त्र और ब्राह्मण दोनों वेद शब्द से कहे जाते हैं । मन्त्रों का अर्थ है क्रिया के समय जिसका अनिवार्यतया उच्चारण हो वह मन्त्र है इसलिए मन्त्र को द्रव्य कोटि में रखा गया है । किस कर्म में किस द्रव्य का हवन हो, किस देवता के लिए हो मन्त्रों का विनियोग जिस कर्म में होता है वही उनका अर्थ है । जिस वेदमन्त्र या ब्राह्मणभाग का विधि में साक्षात विनियोग

नहीं है वह वेदराशि चाहे मन्त्र या ब्राह्मण हो निरर्थक नहीं है । यह भगवान शङ्कराचार्य ने अपने भाष्यों में कहा है । इषेत्वादि मंत्रों में समिधा उत्पाटन का विधान है वह किस तरह अन्वित होगा ? वेदों के द्वारा प्रतिपादित अद्वैत सम्प्रदाय का रक्षण करना शङ्कराचार्य जी को अभीष्ट था जो उनके भाष्य से ही सिद्ध होता है । उन्होंने उपनिषद,गीता एवं ब्रह्मसूत्र पर भाष्य की रचना की इसी को सम्प्रदाय कहते हैं । जो इस सम्प्रदाय को जानने मानने वाला है वही मनीषी है । वही आचार्य पद पर योग्य संन्यासी के अभिषेक का पात्र है ।शङ्कराचार्य धर्मसम्राट होते हैं । चार पीठ उनकी धर्म राजधानियाँ हैं । राजा सुधन्वा के ताम्रलेख के अनुसार आचार्य को देवराज इन्द्र के सदृश उपचार धारण करने की आज्ञा देते हुए उन उपचारों से आचार्य को निर्लिप्त रहने की आज्ञा दी गई है । पूर्व मीमांसा का सूत्र है –

''आम्नायस्य क्रियार्थत्वात् आनर्थक्यं अतदर्थानाम्''

आम्नाय यानि वेद , वेद का अर्थ क्रिया है अर्थात् कर्म है । शास्त्र की परिभाषा है

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च नित्येन कृतकेन च,
पुंसां येनोपदिश्येत तच्छास्त्रमित्यभिधीयते ।।

वेद को शास्त्र इसलिए कहते हैं कि – वेदों द्वारा या वेदानुकूल स्मृतियों द्वारा विधि, निषेध ही कहा जाता है । जो वेदवाक्य प्रवर्तक या निवर्तक नहीं हैं उनको मीमांसा निरर्थक मानता है । अर्थवाद–वाक्य विधि,निषेध ना होने से निरर्थक हैं । किंतु आदि शङ्कराचार्य जी ने उपनिषद,ब्राह्मण इत्यादि में भाष्य लिखकर शास्त्र की व्यापक परिभाषा दी । **''अष्टबर्षं ब्राह्मणं उपनयीत तमध्यापयीत''** इत्यादि वाक्य निरर्थक नहीं है । ये वाक्य विधि की स्तुति और निषेध की निंदा करके विधि में सहायक हैं । **फलवदर्थावबोधकत्वं शास्त्रत्वम्** । इस परिभाषा के अनुसार कर्म, उपासना और ज्ञान के प्रतिपादक समस्त वेद आदि शङ्कराचार्य जी के द्वारा सार्थक हो गये । यही बात सर्वज्ञात्म मुनि ने कही है वक्तारमासाद्य – कुमारिल भट्ट से जो अपूर्णता रह गई थी उसे शङ्कराचार्य जी ने पूर्ण किया । शङ्कराचार्य जी ने कर्मकाण्ड और उपासना को ज्ञान का सहकारी मानते हुए मुख्य फल मोक्ष से जोड दिया जबकि ज्ञान को साक्षात् मोक्ष का कारण कहा ।

परंपरा से प्राप्त वैभव एवं सम्मान देखकर अनेकों व्यक्ति शङ्कराचार्य बनना चाहेंगे उनके लिए उन्होंने महानुशासन में शर्त रख दी कि – जो शङ्कराचार्य द्वारा निर्मित प्रस्थानत्रयी का अध्ययन अध्यापन करने में समर्थ हो वही पात्र समझा जाएगा । ऐसी स्थिति में एक ही पीठ पर अनेकों आचार्यों का अभिषेक उचित नहीं कहा गया । एक पीठ पर लक्षणसम्मत एक ही आचार्य का अभिषेक किया जाना चाहिए । किंतु अगर अनधिकारी पीठारूढ हो जाए तो अन्य पीठ के शङ्कराचार्य को उस पीठ को सञ्चालित करने का आदेश दिया जाय क्योंकि मात्र चार की संख्यापूर्ति करना महानुशासन का उद्देश्य नहीं है । आचार्यत्व का उत्तरदायित्व होना इसका उद्देश्य है । कहा है –

आचिनोति हि शास्त्राणि आचारे स्थापयत्यपि,
स्वयमाचरते यस्मात् तस्मादाचार्य उच्यते ।

जो शास्त्रों के अर्थ का चयन कर स्वयं उसका पालन करे एवं लोक को भी सदाचार में प्रवृत्त करे वह आचार्य होता है । ऐसी स्थिति में उत्तराधिकारी में उक्त योग्यता आवश्यक है। शङ्कराचार्य ने कहा है –

अस्मत्पीठ समारूढः परिव्राडुक्त लक्षणः,
अहमेवेति विज्ञेयो यस्यदेव इति श्रुतेः ।।

मेरे पीठ में उक्त लक्षण सम्मत आचार्य मेरा स्वरूप ही है अतः उस पीठाधीश को अनिवार्य रूप से शङ्कराचार्य के अनुरुप बनाना महानुशासन का उद्देश्य है । जोकि तत्काल नहीं हो सकता और यह भी नियम है जिस तरह राजपीठ क्षणमात्र भी राजाविहीन या रिक्त नहीं होता उसी तरह आचार्यपीठ भी रिक्त नहीं होना चाहिए ।

न जातुमठमुच्छिन्द्यात् अधिकारिण्युपस्थिते -

महानुशासन में अधिकारी की योग्यता का निर्धारण कर दिया गया है जो योग्य होगा वही पीठ सम्हालेगा । इसलिए चार पीठ को आवश्यक संख्यात्मक कहकर स्वयं को पीठाधीश बनाने वाले अपनी योग्यता तो सिद्ध करें । द्वारका के शङ्कराचार्य स्वामी अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ जी ब्रह्मलीन हुए तो उन्होंने अपने इच्छापत्र में लिखा – मैंने अभी तक कोई शिष्य नहीं बनाया है इसलिए ज्योतिष्पीठ के शङ्कराचार्य से अनुरोध किया जाय कि वे द्वारका शारदापीठ का दायित्व भी सम्हालें । इसमें उन्होंने यह नहीं लिखा कि वे संख्यापूर्ति तक मात्र सावधिक ही इसे सम्हालें ।

इस पर कुछ लोगों का कहना था कि महाराजश्री एक ही पीठ सम्हालें किंतु सुधन्वा के ताम्रपत्र में यह उल्लेख है कि शारदापीठ द्वारका निर्णायक है तो परंपरा से प्राप्त शारदापीठ के अधिकार का प्रयोग करते हुए पूर्वाचार्य सच्चिदानन्द तीर्थ जी ने जो व्यवस्था दी है उसका उल्लंघन पूज्य महाराजश्री भला क्योंकर करें ? यह नियम है जिस तरह राजपीठ क्षणमात्र भी राजाविहीन रिक्त नहीं होता उसी तरह आचार्यपीठ भी रिक्त नहीं होता ।

इसी तरह ज्योतिष्पीठ पर जिस विश्वास के साथ स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी की अंतिम इच्छा एवं तत्कालीन पुरी, द्वारका के शङ्कराचार्य जी के नेतृत्व में स्वयं स्वामी करपात्री जी महाराज ने महाराजश्री का अभिषेक किया तो इन मनीषियों का उल्लंघन भला कैसे किया जा सकता है ? ज्योतिष्पीठ पर अनधिकारी स्वयं को शङ्कराचार्य घोषित कर चुके थे उनका निग्रह भी आवश्यक था और वे आज भी सुप्रीमकोर्ट में प्रतिवादी हैं और अंतिम निर्णय की प्रतीक्षा में हैं ।

ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य के रूप में करपात्रीजी द्वारा पदाभिषेक

द्वारकाशारदापीठाधीश्वर शंकराचार्य के रूप में श्रृंगेरी जगद्गुरु द्वारा पदाभिषेक

दो पीठों के आचार्य की स्थिति में महाराजश्री ने दो चतुष्पीठ सम्मेलन भी किये हैं । जहां तक राज्यपाल की बात है तो इस योग्यता को धारण करने वाले अनेकों लोग हैं किंतु महानुशासन की योग्यता वाले अनेक नहीं हैं । कुछ लोगों का कथन कि एक ही व्यक्ति आवश्यकता पडने पर दो राज्यों का राज्यपाल बन सकता है किंतु कुछ समय बाद त्यागपत्र देकर दूसरे व्यक्ति को राज्यपाल बना दिया जाता है इसी तरह महाराजजी ने दो पीठ सम्हाली किंतु अब किसी को एक पीठ का शङ्कराचार्य बना देना चाहिए । तो महाराजश्री तो प्रारम्भ से ही कह रहे हैं कि योग्य व्यक्ति का मुझे पता दिया जाय मैं तत्काल करने तैयार हूं । – अतः यह स्पष्ट है कि महाराजश्री को जब तक यह अटल विश्वास न हो जाये कि आचार्य पद को धारण करने वाला अद्वैत सिद्धान्त पर अटल रहेगा तब तक मात्र चार की संख्या का कोरम पूरा करना सिद्धान्त हानि और आचार्य पीठ की अवमानना ही होगा । जहां तक वसीयत का प्रश्न है तो वसीयत का अर्थ है अंतिम इच्छा । अंतिम समय अपने द्वारा अर्जित सम्पत्ति को व्यक्ति किसी को भी दे सकता है । किंतु अपने पिता – पितामह से प्राप्त सम्पत्ति को अगर किसी अनधिकारी को दे दिया जाय तो वह भी अमान्य ही माना जाएगा । व्यक्ति को शङ्कराचार्य पद परंपरा से एवं शर्तों की पूर्ति पर मिला होता है मात्र वसीयत की योग्यता पर नहीं।

अगर वसीयत पर विचार करें तो यह प्रश्न उठता है कि क्यों शान्तानन्द सरस्वती जी को मनीषियों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया ? प्रयोजन की पूर्ति वसीयत से नहीं होती है तो वह वसीयत अमान्य ही होती है उसका कोई मूल्य नहीं है चाहे वह स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी की रजिस्टर्ड वसीयत ही क्यों न हो । शिष्य को परंपरा से विद्या प्राप्त होती है । शिष्य बनने का अधिकारी वह होता है जो गुरुकुल में गुरु के पास कुछ काल निवास करता है । ब्रह्मविद्या योग्यपात्र को ही दी जाती है । उपनिषद में इन्द्र और विरोचन का प्रसंग आया है इन्द्र ने १०१ बर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया तब उसे ब्रह्मविद्या प्राप्त हुई कारण यह था कि तत् तत् ज्ञान विरोधी जो अंतःकरण के कषाय हैं कच्चापन है वह जब तक दूर नहीं होंगे तब तक विद्या प्राप्त नहीं होगी । इसलिए गुरु शुश्रूषा का विधान है ।

विद्या की प्राप्ति गुरुशुश्रूषा या पुष्कल धन के परस्पर विनिमय से ही होती है अन्यत्र कहीं नहीं । यहॉ ब्रह्मविद्या का प्रश्न है तो यहाँ योग्यता आवश्यक है । गीता में कहा है –

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया,
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः ।

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती न तो कभी अपने गुरु के पास रहे न उनकी कोई सेवा की और ना ही कोई ज्ञान ही ग्रहण किया । ये तो उडिया बाबा के आश्रम में रहते थे इन्होंने तो दक्षिणायन नवरात्रि में दण्ड लिया और चलते बने थे फिर लौट कर भी नहीं गये अपने गुरु के पास । और स्वामी ब्रह्मानन्द जी को अपना मामा बताया करते थे । अतः यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि चतुष्पीठ पर आदि शङ्कराचार्य जी के द्वारा बनाये गए नियम ही सर्वमान्य होंगे स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा बनाए गये नियम नहीं उनकी वसीयत को ही परंपरा मान लेने से व्यवस्था छिन्न भिन्न हो जाएगी ।

वृन्दावन में उडिया बाबा आश्रम पूर्णानन्द तीर्थ ट्रस्ट द्वारा सञ्चालित है जिसमें नियम है कि ट्रस्टाधिपति दण्डी संन्यासी ही होगा । अब उनके बनाए ट्रस्ट के नियम में कोई हेर फेर नहीं कर सकता । ब्रह्मानन्द जी की वसीयत में उत्तराधिकारी उत्तर भारतीय हो यह लिखा है तो यह शङ्कराचार्य जी के सिद्धान्त के प्रतिकूल होने से अमान्य है ।गौडपाद जी बंगाल के थे इस तरह योग्यता में अमुक प्रदेशवासी ही होना चाहिए यह कहना हास्यास्पद है । इसी तरह आचार्यों की लडी लगा देना कि पहले अमुक बाद में अमुक तो यह भी योग्यता हानि करना ही है इसलिए उत्तराधिकारी घोषित किया जाना चाहिए और योग्य व्यक्ति का शाङ्कर–सम्प्रदाय विशिष्ट मनीषियों के द्वारा अभिषेक किया जाना ही यहाँ अभीष्ट है।

पाठकों के मन में यह जिज्ञासा हो सकती है अच्युतानन्द तीर्थ जैसे लोगों के अनर्गल प्रलाप का जो ब्रह्मचारी सहजानन्द और दन्डी स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती ने संस्कृत हिन्दी में प्रत्युत्तर दिया है इसके प्रकाशन की आवश्यकता क्या थी ? तो यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि अच्युतानन्द इतने समझदार कभी नहीं थे और ना ही अभी ही हैं कि वे शास्त्रीय या कोई भी तार्किक बात कर सकें किंतु उन्होंने जो प्रश्न उठाए हैं, वह जिन लोगों के दिमाग की उपज है उन लोगों के लिए भी यह प्रकाशन हो रहा है और यह करना आवश्यक है । विचार से पलायन हम लोग नहीं करते हैं। अच्युतानन्द ने बिषयान्तर करते हुए अनेकों प्रश्न उठाए हैं जिनमें – एक आचार्य दो पीठ पर नहीं हो सकते, पीठ में दसनाम संन्यासी का जो विभाग है उसके अनुसार ही आचार्य का योगपट्ट भी हो, पीठों में चार की संख्या अनिवार्य है और परस्पर क्षेत्रों में प्रवेश वर्जित है इत्यादि प्रश्नों का समाधान किया गया है और इसे जनता के समक्ष लाना समयोचित होगा ।

– ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्यानन्द

सन्दर्भ

अभिव्यक्ति व्यक्ति का स्वभाव है । वह जो कुछ जानता है उसे अभिव्यक्त करने की लालसा भी उसमें रहती है । कोई नई बात जानते ही उसे किसी और को बता देने की हमारी उत्सुकता ही हमारा अभिव्यंजक स्वभाव है । पर अपनी जानकारी और विद्वत्ता ही नहीं, कभी-कभी व्यक्ति अपनी मूर्खता को भी प्रकट करता दिखाई देता है ।

ताजा उदाहरण स्वयं को भूमापीठाधीश्वर कहलाने वाले हरिद्वार निवासी स्वामी अच्युतानन्द का है । यही स्वामी कुछ दिनों पहले तक स्वयं को शारदापीठ का शंकराचार्य भी कहला रहे थे । शारदापीठ के शंकराचार्य के रूप में निर्वाह नहीं हो पाया तो स्वयं को शंकराचार्यों से भी ऊपर समझने लगे और परमपूज्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज पर टिप्पणी कर बैठे ।

दिनांक आठ जून को हरिद्वार के अमर उजाला अखबार में इनकी तरफ से वक्तव्य छपा कि – 'शंकराचार्य पद का राजनीतिकरण ठीक नहीं । अपने इस वक्तव्य में उन्होंने शंकराचार्य जैसे पवित्र और महान् पद पर अनेक दोषारोपण करने की कुचेष्टा की । छपे वक्तव्य का चित्र प्रस्तुत है ।

उसमें कहे गये वाक्यों को यहां उद्धृत कर रहे हैं ।

शंकराचार्य पद का राजनीतिकरण ठीक नहीं :

– स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ

व्यूरो /अमर उजाला, हरिद्वार भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ महाराज ने शारदा एवं द्वारका पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती पर तीखा हमला बोला है ।

उन्होंने कहा कि शंकराचार्य का पद अति सम्मानित होता है । उसे राजनीति से प्रेरित नहीं बनाया जाना चाहिये ।

उन्होंने शंकराचार्य की ओर से उत्तराधिकारी बनाने के बारे में भी कहा कि उत्तराधिकारी का चयन भी सार्वजनिक तौर पर परम्परा के हिसाब से किया जाता है । किसी वसीयत के आधार पर नहीं । यदि ऐसा किया जाता है तो यह धर्मजगत् का अपमान है । संत परम्परा में वसीयत नहीं

की जाती बल्कि उत्तराधिकारी परम्परा के अनुरूप चुने जाते हैं और विधिवत् तरीके से ही उनका पट्टाभिषेक किया जाता है । ऐसे बोलते हुए .....उन्होंने कहा कि सन्त को सर्वकल्याण की भावना से काम करना चाहिये लेकिन ऐसा नहीं किया जा रहा है । स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ महाराज ने कहा कि उत्तराखण्ड में आदि भगवान् शंकराचार्य की समाधि के उद्धार की मांग उठाने वाले जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती को कश्मीर में स्थित शंकराचार्य टीला को लेकर भी आवाज उठानी चाहिये । उन्हें देश के अन्य क्षेत्रों के अलावा जम्मू कश्मीर में जाकर चातुर्मास्य करना चाहिये । पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में स्थित शारदापीठ को भी कब्जे में लेने की बात करनी चाहिये । उन्होंने कहा कि जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के एक शिष्य ने बनारस में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सामने रामराज्यपरिषद् के बैनर तले अपना प्रत्याशी उतारा था । उन्हें राजनीति ही करनी है तो कश्मीर में प्रत्याशियों को चुनाव लड़वाना चाहिये ।

अमर उजाला हरिद्वार

amarujala.com देहरादून | शनिवार, 8 जून 2019 6

शंकराचार्य पद का राजनीतिकरण करना ठीक नहीं

अमर उजाला ब्यूरो

हरिद्वार। भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ महाराज ने शारदा एवं द्वारिका पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य का पद अति सम्मानित होता है। उसे राजनीति से प्रेरित नहीं बनाया जाना चाहिए। उन्होंने शंकराचार्य की ओर से उत्तराधिकारी बनाने के बारे में भी कहा कि उत्तराधिकारी का चयन भी सार्वजनिक तौर पर परंपरा के हिसाब से किया जाता है। किसी वसीयत के आधार पर नहीं। यदि ऐसा किया जाता है तो यह धर्म जगत का अपमान है। संत परंपरा में वसीयत नहीं की जाती बल्कि उत्तराधिकारी परंपरा के अनुरूप चुने जाते हैं और विधिवत तरीके से ही उनका पट्टाभिषेक किया जाता है।

एक बयान में उन्होंने कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य और उनके शिष्य के विचार ही समान नहीं हैं। अच्युतानंद तीर्थ ने कहा कि स्वामी स्वरूपानंद ने मध्यप्रदेश के भोपाल में चातुर्मास किया और कांग्रेस के प्रत्याशी पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को लोकसभा चुनाव जिताने के लिए तमाम प्रयास किए, जबकि एक उन्हीं के एक शिष्य नरेंद्र मोदी और भाजपा के पक्ष में बयानबाजी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संत को सर्वकल्याण की भावना से काम करना चाहिए। स्वामी अच्युतानंद तीर्थ महाराज ने कहा कि उत्तराखंड में आदि भगवान शंकराचार्य की समाधि के उद्धार की मांग उठाने वाले जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती को कश्मीर में स्थित शंकराचार्य टीला को लेकर भी आवाज उठानी चाहिए।

भूमापीठाधीश्वर ने स्वामी स्वरूपानंद पर बोला हमला

स्वामी अच्युतानन्द जी के इस मर्यादाविहीन वक्तव्य से भगवान् शंकराचार्यजी के प्रति आस्थावान् लोगों को बड़ी ठेस पहुंची । जिसके कारण उनके इस उच्छृंखल वक्तव्य पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई । शाकम्भरी श्रीशंकराचार्य आश्रम के प्रभारी ब्रह्मचारी सहजानन्द जी ने स्वामी अच्युतानन्द के स्वयं के भूमापीठाधीश्वर उद्घोषित करने पर प्रश्न उठाते हुये उन्हें पत्र लिखा और उसे सार्वजनिक कर शास्त्रार्थ की चुनौती दी । इस पत्र में उन्होंने हरिद्वार में ही रहने वाले स्वामी राजराजेश्वराश्रम को भी सम्मिलित किया जो स्वयं को शारदापीठाधीश्वर शंकराचार्य के रूप में ख्यापित करते हुये 'कमाई' कर रहे हैं जबकि वे कभी शारदापीठ गये तक नहीं हैं । उस पत्र का चित्र और अखबारों में उस आशय के प्रकाशित समाचारों के चित्र आपके अवलोकनार्थ उपस्थित कर रहे हैं ।

पत्र का पाठ्यरूप अग्रलिखित है –

स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ का व्यर्थ प्रलाप

आज दिनॉक ८ जून को हरिद्वार अमर उजाला अखबार में स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ जी द्वारा पूज्य ज्योतिष्पीठ एवं शारदापीठ,द्वारका के जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द

सरस्वती जी महाराज के लिए '' **शङ्कराचार्य पद का राजनीतिकरण ठीक नहीं** '' शीर्षक से दिया गया वक्तव्य पढा जिसमें उन्होंने कहा कि – शङ्कराचार्य का पद अति सम्मानित होता है, शङ्कराचार्य की नियुक्ति वसीयत से ना होकर अभिषेक से होती है इत्यादि । उनके इस भ्रम का निवारण करना आवश्यक है । शङ्कराचार्य का पद कोई लाभ का पद नहीं है, आदि शङ्कराचार्य जी ने महानुशासन में लिखा है – मेरे द्वारा स्थापित पीठ में जो वेदज्ञ,शुचि एवं जितेन्द्रिय संन्यासी आचार्य पदारूढ होगा वह मेरा ही स्वरूप होगा । यहाँ दो शर्तें आवश्यक हैं, एक तो आचार्य का विद्वान संन्यासी होना दूसरा उस आचार्य को मनीषियों के द्वारा पीठ पर अभिषिक्त किया जाना। यहाँ वसीयत का तो कोई प्रसंग ही नहीं है तो कैसे स्वामी जी इस बात को अखबार के द्वारा सार्वजनिक कर रहे हैं ? शङ्कराचार्य पद को पारंपरिक, सम्मानित बतलाने वाले एवं स्वयं को ही द्वारकापीठ का स्वयंभू शङ्कराचार्य घोषित कर लेने वाले अच्युतानन्द जी भला किस मुख से यह कह सकते हैं ? यह विरोधाभास क्यों ?

प्रथम तो अच्युतानन्द जी आप से ही प्रश्न है कि – परंपरा की दुहाई देने वाले आप स्वयं को भूमा पीठाधीश्वर कहते हैं तो यह भूमापीठ किस परंपरा से है ? भूमा शब्द का अर्थ एवं उसकी शाब्दिक निष्पत्ति क्या है ? भूमापीठ में पीठ का विशेषण भूमा नहीं हो सकता क्योंकि पीठ सीमित होता है जबकि भूमा अनन्त वाचक है । यदि पीठ का अर्थ भूमानन्दतीर्थ व्यक्ति है तो वह भी अल्प होने कारण भूमा हो नहीं सकता । ऐसी स्थिति में आप जिस अधिष्ठान में बैठे हुए हैं वही मिथ्या है तो भला आपके मिथ्याचारी होने में क्या संदेह ।

लोक केसरी न्यूज

Our Mission गंगा ज
"पावन पवित्र, रोगनाशनी, अम्रत तुल्य
गंगाजल को जनकल्याण हेतु जन-जन तक पहुँचान

ऐप्स डाउनलोड | विज्ञापन | खेल जगत | राजनीती | टेक्नोलॉजी | परिधान | स्वास्थ | संस्थापक | लाइव | FB

News | उत्तराखंड | हरिद्वार

तथाकथित शंकराचार्यो को दी शास्त्रार्थ की चुनोती, जाने क्या है सच्चाई

June 9, 2019 · Manoj Giri

हरिद्वार।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के लिए टिप्पणी किए जाने पर उनके शिष्य ब्रह्मचारी शहजानंद प्रभारी शाकुम्भरी पीठ ने राज राजेश्वर आश्रम महाराज व स्वामी अच्युतानंद तीर्थ को शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य का पद अति सम्मानित पद है। इसे लेकर किसी भी तरह की टिप्पणी करना या स्वयंभू शंकराचार्य घोषित करना आदि जगद्गुरु शंकराचार्य के महानूशासन के विपरीत है। उन्होंने कहा कि स्वामी अच्युतानंद तीर्थ से प्रश्न करते हैं। परंपरा की दुहाई देने वाले वह स्वयं को भूमा पीठाधीश्वर किस परंपरा से कहते हैं? भूमा पीठ किस परंपरा से है भूमा शब्द का अर्थ एवं उसकी शब्द निष्पत्ति क्या है? उन्होंने कहा भूमा पीठ का विशेषण भूमा नहीं हो सकता है। क्योंकि पीठ सीमित और भूमा अनंत वाचक है। यदि पीठ का अर्थ भूमानंद तीर्थ व्यक्ति है, तो वह अल्प होने के कारण भूमा हो ही नहीं सकता। उन्होंने राज राजेश्वर आश्रम को शंकराचार्य पद की तृष्णा से ग्रस्त एवं स्वयं को शारदापीठ द्वारका शंकराचार्य कहते घूम रहे हैं। और मंत्रियों के साथ अपनी फोटो खिंचवाना ही गौरव समझ रहे हैं। कहा कि मंडलेश्वर प्रकाशआनंद गिरी द्वारा एक आश्रम बनाया गया और उसका नाम जगतगुरु आश्रम रखा गया आश्रम स्वयं से जुड़ा है। वह जगतगुरु नहीं हो सकते। राज राजेश्वरआश्रम आश्रम नागा सन्यासी है जबकि प्रकाशानंद गिरी नागा नही थे, तो यह प्रकाशानंद के शिष्य भी नहीं है तो ऐसी स्थिति में राज राजेश्वर आश्रम तो प्रकाशानंद द्वारा स्थापित आश्रम के प्रभारी होने लायक भी नहीं शंकराचार्य पद तो दूर की बात है। स्वामी अच्युतानंद तीर्थ को तथाकथित बताते हुए द्वारका के स्वयंभू शंकराचार्य राजराजेश्वर आश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती भी दी है।

Post Views: 314

आप ही के समान हरिद्वार में एक राजराजेश्वराश्रम

भी हैं जो शङ्कराचार्य पद की तृष्णा से स्वयं को शारदापीठ द्वारका का शङ्कराचार्य कहते घूम रहे हैं और मंत्रियों के साथ अपनी फोटो खिंचवाना ही गौरव समझ रहे हैं । मण्डलेश्वर प्रकाशानन्द गिरि द्वारा एक आश्रम बनाया गया और उसका नाम जगद्गुरु आश्रम रखा गया । आश्रम स्वयं में जड है वह जगद्गुरु नहीं हो सकता । राजराजेश्वराश्रम आश्रम-नामा संन्यासी हैं जबकि प्रकाशानन्द जी गिरिनामा थे तो ये तो प्रकाशानन्द जी के शिष्य भी नहीं हैं तो ऐसी स्थिति में राजराजेश्वराश्रम तो प्रकाशानन्द जी द्वारा स्थापित जगद्गुरु आश्रम के प्रभारी होने लायक भी नहीं शङ्कराचार्य पद तो दूर की बात है । आप दोनों तीर्थकाक हैं जैसे कौआ गंगाजल से भरे घडे में चञ्चुपात करके उसे दूषित करता है इसी तरह आप मान्य शङ्कराचार्य पर अपनी दूषित वाणी का प्रयोग कर अपनी मानसिकता समाज को दिखा रहे हैं ।

प्रस्तुत लेख में हम भूमा शब्द का निर्वचन करते हुए लक्षणादि का संक्षिप्त विवरण देकर वास्तविक अर्थ को प्रकाशित कर रहे हैं । स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ को एवं तथाकथित द्वारका के स्वयंभू शङ्कराचार्य राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती दे रहे हैं । आप दोनों को शङ्कराचार्य पद की बहुत तृष्णा है आप आयें और अपनी शास्त्रीय योग्यता का परिचय दें ।

०८/०६/२०१९ **ब्रह्मचारी सहजानन्द**

प्रभारी शाकम्भरी शक्तिपीठ

(इस पत्र के साथ ही भूमा शब्द का निदर्शन भी संलग्न करके भेजा गया जो कि निम्नवत् है ।)

भूमा शब्द निदर्शन -

छान्दोग्योपनिषद में एक आख्यायिका का वर्णन है जिसमें नारद ने सनत्कुमारों के पास जाकर प्रश्न किया -

अधीहि भगव इति होपससाद सनत्कुमारं नारदस्तं होवाच यद्वेत्थ तेन मोपसीद ततस्त ऊर्ध्वं वक्ष्यामीति स होवाच ।। १ ।।

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं, दैवं, निधिं, वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां, ब्रह्मविद्यां, भूतविद्यां, क्षत्रविद्यां, नक्षत्रविद्यां, सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि ।। २ ।।

हे भगवन् ! मुझे उपदेश करें ऐसा कहते हुए नारद शिष्य-भाव से सनत्कुमारों के सामने शरणागत हुए । सनत्कुमार बोले तुम जो कुछ जानते हो उसे मुझसे कहो फिर तुम्हारे ज्ञान से आगे तुम्हें उपदेश करूंगा । तब नारद बोले -मैंने चारों वेदों का अध्ययन किया है इसके साथ

ही इतिहास, पुराण, व्याकरण, श्राद्धकल्प, गणित, उत्पातज्ञान, महाकलानिधि शास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, निरुक्त आदि का भी अध्ययन किया है । यह सुनकर सनत्कुमारों ने नाम से लेकर क्रिया (करोति) तक विशद व्याख्या करते हुए अंत में भूमा की व्याख्या करते हुए बतलाया कि –

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमात्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमानं भगवो विजिज्ञास इति ।

सनत्कुमार बोले – निश्चय ही जो भूमा (महान) है वही सुखरूप है। अल्प में सुख नहीं है अतः तुझे भूमा की ही विशेष रूप से जिज्ञासा करनी चाहिए। तब नारद ने कहा मैं आपसे भूमा के ज्ञान की याचना करता हूँ ।

सनत्कुमारों ने कहा – जिस समय भूमातत्त्व में द्रष्टा किसी भी अन्य दृश्य को नहीं देखता नहीं सुनता और ना ही जानता है वह भूमा है । किन्तु जहाँ पर द्रष्टा अपने से भिन्न वस्तु को देखता है, अन्य को सुनता है एवं अन्य को जानता है वह अल्प है । जो भूमा है वही अमृत है और जो अल्प है वह मर्त्य है । नारद ने कहा – भगवन् वह भूमा किसमें प्रतिष्ठित है ? सनत्कुमार बोले – भूमा अपनी महिमा में प्रतिष्ठित है अर्थात् भूमा किसी के आश्रित नहीं है ।

हम भी हरिद्वार में ही उपस्थित थे । हमने भी भूमा शब्द का शाब्दिक निर्वचन कर स्वामी अच्युतानन्द जी को ब्रह्मचारी सहजानन्द जी के पत्र के साथ ही प्रेषित किया ।

भूमा शब्द का शाब्दिक निर्वचन

पाणिनीय सूत्र – **बहोर्लोपो भू च बहोः – बहोः परयोरिमेयसोर्लोपःस्याद् बहोश्च भूरादेशः ।** भूमा,भूयान् । बहु शब्द से परे इमनिच् और ईयसुन् प्रत्ययों का लोप हो तथा बहु के स्थान पर भू आदेश हो । **आदेःपरस्य** इस परिभाषा से इकार और ईकार का लोप होता है भू आदेश सर्वादेश है । बहोर्भावः भूमा । बहु ङस से भाव में **''पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा''** सूत्र द्वारा इमनिच् प्रत्यय होता है अनुबन्ध लोप तथा सुप् ङस का भी लुक करने पर बहु+इमन् हुआ । **'' बहोर्लोपो भू च बहोः''** सूत्र से इमन् के इकार का लोप और बहु के स्थान पर भू सर्वादेश होने पर – भूमन् शब्द बनता है । विभक्ति लाने पर राजन् शब्द की तरह भूमा के रूप होंगे ।

– ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्यानन्दः

(इस पत्र के उत्तर में स्वामी अच्युतानन्द जी की ओर से बयान आया कि उन्होंने चुनौती स्वीकार कर ली है । उनका बयान कुछ इस तरह का था –)

स्वामी अच्युतानन्द ने स्वीकारी शास्त्रार्थ की चुनौती

ब्यूरो/ अमर उजाला, हरिद्वार । ज्योतिष और शारदापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के शिष्य स्वामी सहजानन्द जी की ओर से दी गई शास्त्रार्थ की चुनौती को भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ महाराज ने स्वीकार लिया है । उन्होंने कहा कि जो लोग चुंनौती दे रहे हैं वे शास्त्रार्थ से पहले अपनी शिक्षा और शास्त्रार्थ के मुद्दों के बारे में प्रमाण दें । इसके बाद शास्त्रार्थ किया जायेगा । विगत दिवस जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के शिष्य स्वामी सहजानन्द ने बयान जारी कर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ को शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी थी । इस चुनौती को स्वीकार करते हुये भूमापीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानन्द

अमर उजाला

होम | शहर और राज्य | देश | टेक | ऑटो | मनोरंजन | ज्योतिष | एक्सक्लूसिव | वीडियो

उत्तराखंड › हरिद्वार | ऋषिकेश | अल्मोड़ा | उत्तर काशी | ऊधम सिंह नगर | कोटद्वार | चमोली

Home › Uttarakhand › Haridwar › अच्युतानंद तीर्थ ने स्वीकारी शास्त्रार्थ की चुनौती

अच्युतानंद तीर्थ ने स्वीकारी शास्त्रार्थ की चुनौती

देहरादून ब्यूरो Updated Tue, 11 Jun 2019 11:52 PM IST

ब्यूरो/अमर उजाला, हरिद्वार। ज्योतिष और शारदापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के शिष्य स्वामी सहजानंद की ओर से दी गई शास्त्रार्थ की चुनौती को भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ महाराज ने स्वीकार लिया है। उन्होंने कहा कि जो लोग चुनौती दे रहे हैं वे शास्त्रार्थ से पहले अपनी शिक्षा और शास्त्रार्थ के मुद्दों के बारे में प्रमाण दें। इसके बाद शास्त्रार्थ किया जाएगा।

विगत दिवस जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के शिष्य स्वामी सहजानंद ने बयान जारी कर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ को शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी थी। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए भूमा पीठाधीश्वर स्वामी अच्युतानंद तीर्थ महाराज ने कहा कि स्वामी सहजानंद बताएं कि उन्होंने कहां से शिक्षा ग्रहण की है। उन्होंने कहा कि भारत साधू समाज का भी राजनीतिकरण किया जा रहा है। ऐसे संत को पदाधिकारी बनाया गया है जो पहले कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य द्वारा राहुल गांधी की नागरिकता पर बयान देना और ईवीएम के बारे में बात करना जैसे बयान भी दर्शाते हैं कि संत राजनीति प्रेरित चर्चा कर रहे हैं। दंडी स्वामी सुरेश्वरानंद महाराज ने बयान जारी कर कहा कि शंकराचार्य के शिष्य खुद भाजपा के खिलाफ विधानसभा और लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी खड़े कर रहे हैं, यह राजनीति नहीं तो क्या है। खुद स्वामी सहजानंद भाजपा के पक्ष की बात कर रहे हैं, जबकि उनके गुरु कांग्रेस के हित के बयान देते हैं। स्वामी सहजानंद से उन्होंने पूछा कि वे जिस शाकुंभरी पीठ पर विराजमान हैं क्या वह वैधानिक है।

तीर्थ महाराज ने कहा कि स्वामी सहजानन्द बतायें कि उन्होंने कहां से शिक्षा ग्रहण की है । उन्होंने कहा कि भारत साधु समाज का भी राजनीतिकरण किया जा रहा है । ऐसे सन्त को पदाधिकारी बनाया गया है जो पहले कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड चुके हैं । उन्होंने कहा कि शंकराचार्य द्वारा राहुल गांधी की नागरिकता पर बयान देना और ई वी एम के बारे में बात करना जैसे बयान ही दर्शाते हैं कि सन्त राजनीति प्रेरित चर्चा कर रहे हैं ।

दण्डी स्वामी सुरेश्वरानन्द महाराज ने बयान जारी कर कहा कि शंकराचार्य के शिष्य खुद भाजपा के खिलाफ विधानसभा और लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी खडे कर रहे हैं, यह राजनीति नहीं तो क्या है । खुद स्वामी सहजानन्द भाजपा के पक्ष की बात कर रहे हैं । जबकि उनके गुरु कांग्रेस के हित के बयान देते हैं । स्वामी सहजानन्द से उन्होंने पूछा कि वे जिस शाकुम्भरी पीठ पर विराजमान हैं क्या वह वैधानिक है ।

(स्वामी अच्युतानन्द जी के इस वक्तव्य का खण्डन ब्रह्मचारी सहजानन्द जी ने अपने इस वक्तव्य से किया ।)

भगवती शाकुम्भरी के शक्तिपीठ का अपमान करना स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ का प्रज्ञापराध है

-ब्रह्मचारी सहजानन्द

स्वामी अच्युतानन्द को मैंने शास्त्रार्थ की चुनौती इसलिये दी थी कि वे स्वयं को भूमापीठाधीश्वर सिद्ध करें । मैंने उनसे यह जानना चाहा था कि यह भूमा क्या है ? और क्या वह किसी पीठ का विशेषण हो सकता है ? इसके पलट में स्वामी अच्युतानन्द शाकम्भरी पीठ के सम्बन्ध में प्रश्न उठाकर अपनी शास्त्रीय अनभिज्ञता को सार्वजनिक कर रहे हैं । दुर्गा सप्तशती में कथा आती है – एक बार सौ वर्ष पर्यन्त अनावृष्टि होने के कारण ऋषिगण जगदम्बा की शरण में गये । उनकी दीन दशा को देखकर भगवती के नेत्रों से आंसू निकले जो कि जल प्रवाह बनकर पृथ्वी को आप्लावित किये । जिससे शाक की उत्पत्ति हुई और सभी को जीवन दान मिला । वही देवी शाकम्भरी के नाम से विख्यात हुईं ।

तब से देवी की आज्ञा से लोग उनका पूजन कर रहे हैं और अभीष्ट प्राप्त कर रहे हैं। आपसे हमारा प्रश्न यही था कि – यह भूमा है क्या ? जिसके आप पीठाधीश्वर हैं ? यह भूमा कोई देवी है या तत्त्व है या भूमा कोई स्कूल कालेज की डिग्री है ? जिसके बल पर आप स्वयं को ज्ञानी समझ रहे हैं ? इन बातों का जवाब न देकर अनर्गल बातों को उठाकर आप मूल–प्रश्न से पीछा नहीं छुडा सकते हैं ।

स्वामी अच्युतानन्द शाकम्भरी देवी के अस्तित्त्व पर प्रश्न उठाकर सनातनधर्म विरोधी

बात कर रहे हैं । जहाँ तक शिक्षा के प्रमाणपत्र की बात की है तो यह सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार तय किया जाने वाला पत्रक है जो सरकारी नौकरी के स्तर पर तो प्रमाण है पर प्राच्य विद्या में प्रमाण नहीं ।

आज भारत में शंकराचार्य के भाष्यादि ग्रन्थ पढाने वाले कितने सरकारी शिक्षक हैं ? आप बतायें । इन ग्रन्थों को तो परम्परा से गुरुकुल में पढा जाता है । काशी या दक्षिण भारत के दो चार सरकारी संस्थानों के अलावा अब इसका पठन-पाठन बन्द है । हमारे श्रीविद्यामठ, वाराणसी और द्वारका में जो सर्ववेदशाखाओं का पठन-पाठन कराया जाता है वह उत्तर और पश्चिम भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है ।

आपने स्कूली सर्टिफिकेट को प्रमाण मानते हुये उसे ही ज्ञान में प्रमाण माना है तो शास्त्रार्थ के लिये यह कहीं अनिवार्य नहीं है कि वादी-प्रतिवादी के पास स्कूली सर्टिफिकेट भी हो । अनिवार्य तो यह है कि वह उन प्रश्नों का उत्तर दे जो शास्त्रसम्मत हों । जहाँ तक ईवीएम का प्रश्न है तो क्या भूमापीठ में इन मशीनों की शुद्धता का प्रमाण पत्र जारी किया है ? कि आपको इस बात का बुरा लग रहा ? अगर दो चार मशीनों की रिपोर्ट भी गलत है तो सभी पर संदेह करना स्वाभाविक है । आप बार-बार राजनीति से दूर रहने की बात करते हैं क्या आप जानते हैं कि राजनीति किसे कहते हैं ? यह राजनीति हमारे प्राच्यविद्या के ग्रन्थों का विषय है जिसे ऋषियों ने प्रकट किया है और उसके मानक तय किये हैं । आप जैसे लोग तो उस शुद्ध राजनीति से अनभिज्ञ होकर उसे दलगत बनाकर दलदल बनाने में लगे हैं । भारत से गौहत्या बन्द करके गौमांस निर्यात बन्द किया जाये । स्कूलों में रामायण, महाभारत की शिक्षा दी जाये, गंगा को अविरल और निर्मल किया जाये, खाद्यान्नों में मिलावट बन्द की जाये, नाबालिग कन्याओं से होने वाली क्रूरता बन्द की जाये, मुस्लिम साईं की पूजा हिन्दू न करे यह सब कुछ कहना अनुचित है और राजनीति है तो कृपया स्वामी अच्युतानन्द ही बतावें कि उचित क्या है ? अस्तु ।

प्रकृत विषय यह है जिसका उत्तर मांगा गया है कि- शास्त्र के अनुसार भूमापीठ की स्थिति क्या है ? इसकी सिद्धि कैसे होगी ? शंकराचार्य का अभिषेक मठाम्नाय महानुशासन के आधार पर होगी या अखबारों के आधार पर ? न कि यह कि कौन किसका समर्थन करता है कौन किसका विरोध करता है । हमने स्वामी अच्युतानन्द पर कोई व्यक्तिगत आक्षेप नहीं किया है किन्तु कौन मूर्ख और कौन विद्वान् है यह तो शास्त्रार्थ से ही तय होगा । सर्टिफिकेट से नहीं ।

- ब्रह्मचारी सहजानन्द

दिनांक १० जून २०१९ — प्रभारी शाकम्भरी पीठ

(ब्रह्मचारी सहजानन्द जी के इस पत्र का कोई उत्तर स्वामी अच्युतानन्द की ओर से नहीं आया ।)

इसी बीच बदरीनाथ की यात्रा पर आये दक्षिण भारत के (पम्पाक्षेत्र-किष्किन्धा) से आये स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती जी ने हरिद्वार में इन बातों को सुना। धर्म की यह हानि होती देख उनसे न रहा गया तो उन्होंने हरिद्वार के प्रेस क्लब में प्रेसवार्ता आयोजित कर एवं डाक से रजिस्टर्ड पत्र भेजकर स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ एवं स्वामी राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी । जिसका प्रकाशन हरिद्वार से प्रकाशित होने वाले लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने किया । इस चुनौती के साथ एक सप्ताह में शास्त्रार्थ कर लेने का अल्टीमेटम भी दिया गया था । अवलोकन करें ।

उन्होंने जो पत्र जारी किया उसकी अविकल प्रति प्रस्तुत है ।

स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ एवं स्वामी राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती

विगत दिनों स्वामी अच्युतानन्द को शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई थी कि वे स्वयं को भूमापीठाधीश्वर सिद्ध करें । उनसे यह पूछा गया था कि यह भूमापीठ क्या है ? इसके पलट स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ शाकम्भरी पीठ और शिक्षा प्रमाणपत्र के सम्बन्ध में प्रश्न उठाकर अपने शास्त्रीय अनभिज्ञता को सार्वजनिक कर रहे हैं । आप जिस तरह सनातनी जनता से भूमा पीठाधीश्वर बनकर धन उगाही कर रहे हैं तो अब यह आवश्यक है कि आपको और जनता को भूमापीठाधीश्वर की सत्यता से अवगत कराया जाये ।

भूमापीठ शब्द में भूमा शब्द के मकार में जो आ की मात्रा है वह दोषपूर्ण है । जिस

देशभर में अपने नाम के आगे शंकराचार्य लगाने वालों को चुनौती

गोविंदानंद ने संतों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी

वार्ता

हरिद्वार | **हमारे संवाददाता**

शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती के शिष्य गोविंदानंद सरस्वती ने देशभर के उन संतों पर सवाल खड़े किए हैं जो अपने नाम के आगे जगद्गुरु और शंकराचार्य लगात्रे हैं। गोविंदानंद ने ऐसे संतों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। संत गोविंदानंद ने कहा कि सात दिन के भीतर संत उनके साथ शास्त्रार्थ कर सकते हैं।

सोमवार को गोविंदानंद सरस्वती ने प्रेस क्लब में वार्ता कर हरिद्वार के अलावा देशभर के उन संतों पर गंभीर आरोप लगाए जो अपने नाम के आगे शंकराचार्य लगाते हैं। गोविंदानंद ने कहा कि शंकराचार्य सनातन धर्म को आगे बढ़ाने का काम करते हैं, लेकिन कुछ संत ऐसे हैं जो फर्जी शंकराचार्य बने बैठे हैं। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि ऐसे शंकराचार्य उनसे शास्त्रार्थ करें जो अपने आप को शंकराचार्य मानते हैं। उन्होंने दो संतों को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित भी किया है। उन्होंने दावा किया है कि पहले भी वो पांच फर्जी शंकराचार्यों से शास्त्रार्थ कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि पूरे देश में घूमकर वो ऐसे संतों के खिलाफ हैं। गोविंदानंद ने कहा कि वर्ष 2021 में होने वाले आगामी कुंभ मेले को लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री को इस ओर ध्यान देना चाहिए। कहा कि मुख्यमंत्री ऐसे लोगों पर बैन लगाएं, जो नकली शंकराचार्य हैं।

अर्थ में भूमापीठ शब्द का व्यवहार किया जा रहा है वह उसके परस्पर विरुद्ध अर्थ को दे रहा है, अर्थात् विवक्षितार्थ विरुद्ध है । यहां भूमापीठ शब्द के दोष को विस्तारपूर्वक बताया जा रहा है । पाणिनीय सूत्र– **बहोर्लोपो भू च बहोः - बहोः परयोरिमेयसोर्लोपः स्याद् बहोश्च भूरादेशः। भूमा, भूयान् ।** बहुत्व अर्थ में बहु शब्द का लोप करके उस स्थान पर भू आदेश होता है । **पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा** इस सूत्र से इमनिच् प्रत्यय होता है, भू + इमनिच् यहां च की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा नि में इ की उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से **इत् संज्ञा तस्य लोपः** से दोनों का लोप । अब बचा भूमन । इस भूमन् शब्द का **सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ** सूत्र से उपधादीर्घ होता है । अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा इस सूत्र से भूमान् बनता है । फिर नकार का लोप होकर भूमा इत्यादि रूप से सिद्ध होते हैं । अब इस भूमन् शब्द के साथ पीठ शब्द का समास करना है तो प्रकृति भूमन् है इससे पीठ शब्द का समास करने पर 'भूमपीठ' शब्द बनता है । अगर भूमापीठ कहा जायेगा तो यहां सन्धि करने पर भूम +अपीठ, भूमापीठ होगा । अतः भूमापीठ शब्द सर्वथा ही विरुद्धार्थक है । ललितासहस्रनाम स्तोत्रपाठ में वर्णित है– **एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ।** यहां भगवती का भूमरूपा विशेषण है भूमारूपा नही है । अतः यह सिद्ध है कि समास करने पर भूमपीठ शब्द की सिद्धि होती है न कि भूमा पीठ की । अतः यहां स्वामी अच्युतानन्द, अपीठाधीश्वर सिद्ध होते हैं ।

अब यह मूर्खता क्या, वज्रमूर्खता की पराकाष्ठा है कि जिस भूमापीठ के अधीश्वर अच्युतानन्द तीर्थ मनमाना बन बैठे हैं वह अधिष्ठान ही मिथ्या है । इनकी इन्हीं सब मूर्खताओं को ठीक करने विगत दिनों शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई थी किन्तु '**मूरख हृदय न चेत**' यह महाशय पूछे गये प्रश्न का उत्तर न देकर शाकम्भरी पीठ पर ही सवाल उठाने लगे । ये वही महाशय हैं जिन्होंने स्वयं को शारदापीठ, द्वारका का स्वयंभू शंकराचार्य घोषित कर लिया था।

मान्य आचार्य परम्पराओं की गरिमा को ठेस पहुंचाने का मिथ्या प्रयास करने वाले अब शंकराचार्य पद को अति सम्माननीय कहकर –निरापाखण्ड कर रहे हैं। आपको यह पता होना चाहिये– शंकराचार्य पद अगर सम्माननीय है तो वह पीठासीन आचार्यों की योग्यता के कारण है , मात्र पद पर बैठने के कारण नहीं है । आप जैसे योग्यता विहीन लोग मात्र पद की आड लेकर स्वयं को पुजवाना चाहते हैं । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण स्वयं को भूमापीठाधीश्वर कहना । आपको जब यही नहीं पता कि भूमापीठ शब्द सर्वथा अशुद्ध है तब आप निरक्षर भट्टाचार्य, भला कैसे मान्य आचार्यों पर आक्षेप कर सकते हो ? वर्तमान ज्योतिष्पीठ और शारदापीठ द्वारका के शंकराचार्य जी ने काशी में महेश्वरानन्द जी एवं स्वामी करपात्री जी से जिन ग्रन्थों का अध्ययन किया है उनके तो आपको नाम भी नहीं मालूम होंगे ।

स्वामी उडिया बाबा के जिस राजयोग को उन्होंने आत्मसात् किया है उसे आप जैसे श्वानसेवी भला क्या समझ पायेंगे? स्वामी अच्युतानन्द शाकम्भरी देवी के अस्तित्त्व पर प्रश्न उठाकर

॥ स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ एवं स्वामी राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती ॥

विगत दिनों स्वामी अच्युतानन्द को शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई थी कि वे स्वयं को भूमापीठाधीश्वर सिद्ध करें । उनसे यह पूछा गया था कि यह भूमापीठ क्या है ? इसके पलट स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ शाकम्भरी पीठ और शिक्षा प्रमाणपत्र के संबंध में प्रश्न उठाकर अपनी शास्त्रीय अनभिज्ञता को सार्वजनिक कर रहे हैं । आप जिस तरह सनातनी जनता से भूमापीठाधीश्वर बनकर धन उगाही कर रहे हैं तो अब यह आवश्यक है कि आपको और जनता को भूमापीठाधीश्वर की सत्यता से अवगत कराया जाय ।

भूमापीठ शब्द में भूमा शब्द के मकार में जो आ की मात्रा है वह दोषपूर्ण है । जिस अर्थ में भूमापीठ शब्द का व्यवहार किया जा रहा है वह उसके परस्पर विरुद्ध अर्थ को दे रहा है, अर्थात् विवक्षितार्थ विरुद्ध है । यहां भूमापीठ शब्द के दोष को विस्तारपूर्वक बताया जा रहा है । पाणिनीय सूत्र – **बहोर्लोपो भू च बहो:** – **बहो: परयोरिमेयसोर्लोप:स्याद् बहोश्च भूरादेश:** । भूमा,भूयान् । बहुत्व अर्थ में बहु शब्द का लोप करके उस स्थान पर भू आदेश होता है । **पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा** इस सूत्र से इमनिच् प्रत्यय होता है, भू + इमनिच् यहाँ च् की **हलन्त्यम्** सूत्र से इत्संज्ञा तथा नि में इ की **उपदेशेऽजनुनासिक इत्** सूत्र से इत् संज्ञा **तस्यलोप:** से दोनों का लोप अब बचा भूमन् । इस भूमन् शब्द का **सर्वनामस्थाने चा सम्बुद्धौ** सूत्र से उपधादीर्घ होता है । **अलोन्त्यात् पूर्व उपधा** इस सूत्र से भूमान् बनता है फिर नकार का लोप होकर भूमा इत्यादि रूप सिद्ध होते है । अब इस भूमन् शब्द के साथ पीठ शब्द का समास करना है तो प्रकृति भूमन् है इससे पीठ शब्द का समास करने पर '' **भूमपीठ**'' शब्द बनता है । अगर भूमापीठ कहा जायेगा तो यहाँ सन्धि करने पर भूम + अपीठ, भूमापीठ होगा । अत: भूमापीठ शब्द सर्वथा ही विरुद्धार्थक है । ललिता सहस्रनाम स्तोत्रपाठ में वर्णित है – एकाकिनी **भूमरूपा** निर्द्वैता द्वैतवर्जिता '' यहाँ भगवती का **भूमरूपा** विशेषण है भूमारूपा नहीं है । अत: यह सिद्ध है कि समास करने पर **भूमपीठ** शब्द की सिद्धि होती है ना कि **भूमापीठ** की अत: यहाँ स्वामी अच्युतानन्द, अपीठाधीश्वर सिद्ध होते हैं ।

अब यह मूर्खता क्या, वज्रमूर्खता की पराकाष्ठा है कि जिस भूमापीठ के अधीश्वर अच्युतानन्द तीर्थ मनमाना बन बैठे हैं वह अधिष्ठान ही मिथ्या है । इनकी इन्हीं सब मूर्खताओं को ठीक करने विगत दिनों शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई थी किंतु '' मूरख हृदय न चेत '' ये महाशय पूछे गये प्रश्न का उत्तर न देकर शाकम्भरी पीठ पर ही सवाल उठाने लगे । ये वही महाशय हैं जिन्होंने स्वयं को शारदापीठ द्वारका का स्वयंभू शङ्कराचार्य घोषित कर लिया था । मान्य आचार्य परंपराओं की गरिमा को ठेस पहुँचाने का मिथ्या प्रयास करने वाले अब शङ्कराचार्य पद को अति सम्माननीय कहकर निरा-पाखण्ड कर रहे हैं । आपको यह पता होना चाहिए शङ्कराचार्य पद अगर सम्माननीय है तो वह पीठासीन आचार्यों की योग्यता के कारण है, मात्र पद पर बैठने के कारण नहीं है । आप जैसे योग्यताविहीन लोग मात्र पद की आड लेकर स्वयं को पुजवाना चाहते हैं । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण स्वयं को भूमापीठाधीश्वर कहना । आपको जब यही नहीं पता कि भूमापीठ शब्द सर्वथा अशुद्ध है तब आप निरक्षर भट्टाचार्य, भला कैसे मान्य आचार्यों पर आक्षेप कर सकते हो ? वर्तमान ज्योतिष्पीठ और शारदापीठ द्वारका के शङ्कराचार्य जी ने काशी में महेश्वरानन्द जी एवं स्वामी करपात्री जी से जिन ग्रन्थों का अध्ययन किया है उनके तो आपको नाम भी नहीं मालूम होंगे । स्वामी उडिया बाबा से जिस राजयोग को उन्होंने आत्मसात किया है उसे आप जैसे श्वानसेवी भला क्या समझ पायेंगे ? स्वामी अच्युतानन्द शाकम्भरी देवी के अस्तित्व पर प्रश्न उठाकर सनातनधर्म विरोधी बात कर रहे हैं । आपने शिक्षा के प्रमाणपत्र की बात की है तो यह सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार तय किया जाने वाला पत्रक है जो सरकारी नौकरी के स्तर पर तो प्रमाण है पर प्राच्यविद्या में प्रमाण नहीं ।

आज भारत में शङ्कराचार्य के भाष्यादि ग्रन्थ पढाने वाले कितने सरकारी शिक्षक हैं आप बतायें ? इन ग्रन्थों को तो परंपरा से गुरुकुल में पढा जाता है काशी या दक्षिण भारत के दो चार सरकारी संस्थानों के अलावा अब इसका पठन पाठन बन्द है । हमारे श्रीविद्यामठ, वाराणसी और द्वारका में जो सर्ववेदशाखाओं का पठन पाठन कराया जाता है वह उत्तर और पश्चिम भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है । आपने स्कूली सर्टिफिकेट को प्रमाण मानते हुए उसे ही ज्ञान में प्रमाण माना है तो शास्त्रार्थ के लिए यह कहीं अनिवार्य नहीं है कि वादी-प्रतिवादी के पास स्कूली सर्टिफ़िकेट भी हो । अनिवार्य तो यह है कि वह उन प्रश्नों का शास्त्रसम्मत उत्तर दे। आप बार-बार राजनीति से दूर रहने की बात कहते हैं क्या आप जानते हैं राजनीति किसे कहते हैं ? यह राजनीति हमारे प्राच्य विद्या के ग्रन्थों का बिषय है जिसे ऋषियों ने प्रकट किया है और उसके मानक तय किये हैं आप जैसे लोग तो उस शुद्ध राजनीति से अनभिज्ञ होकर उसे दलगत राजनीति बनाकर दलदल बनाने में लगे हैं । भारत से गोहत्या बन्द करके गोमाँस निर्यात बन्द किया जाय, स्कूलों में रामायण,महाभारत की शिक्षा दी जाय, गंगा को अविरल और निर्मल किया जाय, खाद्यान्नों में मिलावट बन्द की जाय, नाबालिग कन्याओं से होने वाली क्रूरता बन्द की जाय, मुस्लिम साई की पूजा हिन्दू ना करें अगर यह सब कुछ कहना अनुचित है और राजनीति है तो कृपया स्वामी अच्युतानन्द ही बतावें उचित क्या है ? अस्तु ।

मैं स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती दण्डी संन्यासी होने के नाते यह आवश्यक समझता हूँ कि आचार्यों को अपमानित ना किया जाय श्रीमद्भागवत में लिखा है –

'' आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् । न मर्त्यबुद्ध्याऽसूयेत सर्वदेवमयो गुरु:''

आचार्य परमात्मा का स्वरूप हैं इनसे सामान्य मनुष्य की भाँति व्यवहार ना करे । अच्युतानन्द स्वयं को तीर्थ कहते हैं जो कि शारदापीठ, द्वारका का संन्यासी होता है तो अपने पीठाचार्य के विद्यमान रहते ही उनके स्थान पर स्वयं को वहाँ का आचार्य घोषित कर लेना उनको निर्देश देना धृष्टता है इन सब बातों से मेरा हृदय दु:खित है इसलिए मैं शास्त्रार्थ की चुनौती दे रहा हूँ । आप शास्त्रार्थ करने वाले की योग्यता का प्रमाणपत्र चाहते हैं तो इसका प्रमाण शास्त्रार्थ से ही हो जाएगा क्योंकि मैं आपसे संस्कृत भाषा में ही शास्त्रार्थ करूँगा । जो भी प्रश्न मैं करूँगा उसका उत्तर आपको संस्कृत में ही देना होगा । आधार ग्रन्थ – व्याकरणशास्त्र, छांदोग्योपनिषद् , मठाम्नाय महानुशासन एवं ललितासहस्त्रनामदि होंगे । पूज्य ज्योतिष्पीठ एवं शारदापीठ द्वारका के जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी महाराज हरिद्वार के प्रवास पर हैं । अच्युतानन्द तीर्थ ने सर्वप्रथम अखबारों में उनके खिलाफ अनर्गल वक्तव्य देना प्रारम्भ किया । स्वरूप से ही कालनेमी की भाँति लगने वाले, निर्लज्जता और मूर्खता के मूर्तिमान स्वरूप, स्वामी अच्युतानन्द को एवं हरिद्वार निवासी राजराजेश्वराश्रम को जो कि स्वयं को शारदापीठ द्वारका का शङ्कराचार्य कहते हैं यह पत्रक भेजा जा रहा है कि आप दोनों अपनी स्वयं की उपाधि के औचित्य पर हमसे शास्त्रार्थ करें । प्रकृत बिषय यह है जिसका उत्तर माँगा गया है कि – शास्त्र के अनुसार भूमापीठ की स्थिति क्या है ? इसकी सिद्धि कैसे होगी ? राजराजेश्वराश्रम बतावें कि शङ्कराचार्य का अभिषेक मठाम्नाय महानुशासन के आधार पर होगा या अखबारों के आधार पर होगा ? ना कि यह कि कौन किसका समर्थन करता है कौन किसका विरोध करता है । हमने स्वामी अच्युतानन्द पर या राजराजेश्वराश्रम पर कोई व्यक्तिगत आक्षेप नहीं किया है किंतु कौन मूर्ख और कौन विद्वान है यह तो शास्त्रार्थ से ही निर्णीत होगा । आप दोनों शारदापीठ द्वारका के संन्यासी तीर्थ एवं आश्रम हैं । वर्तमान में शारदापीठ,द्वारका के मान्य शङ्कराचार्य पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज हैं अत: राजराजेश्वराश्रम बतावें वे स्वयं को कहाँ का शङ्कराचार्य ख्यापित करते हैं । उत्तर ना दिये जाने की स्थिति में आगे की स्थिति पर विचार किया जावेगा ।

प्रेषक

स्वामी श्री गोविन्दानन्द सरस्वती

स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती

ज्येष्ठ शु.१३ / वि. २०७६
१५/०६/२०१९

सम्पर्क सूत्र-8762711113
E-mail:govindanandasaraswati@gmail.com

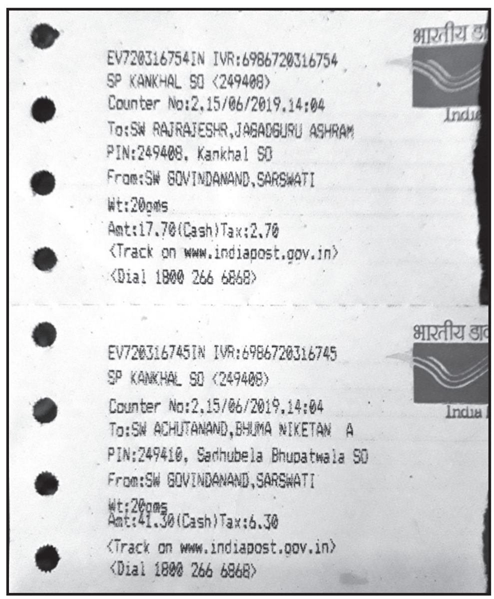

स्वयंभू शंकराचार्य शास्त्रार्थ की चुनौती करें स्वीकार : गोविंदानंद

हरिद्वार (एसएनबी)।

स्वयंभू शंकराचार्यों की वजह से सनातन धर्म को भारी हानि हो रही है। खुद को स्वयंभू शंकराचार्य घोषित करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। स्वयंभू शंकराचार्य या तो शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार करें अन्यथा असली शंकराचार्यों से माफी मांगें। यह बात स्वामी गोविंदानंद सरस्वती महाराज ने प्रेसवार्ता में कही।

उन्होने कहा कि देश में चार शंकराचार्य पीठ हैं, लेकिन दर्जनों लोग खुद को शंकराचार्य घोषित कर देश को गुमराह कर रहे हैं। कहा कि अपूज्य लोगों की पूजा होने से धर्म को हानि पहुंच रही है। उन्होंने स्वयंभू शंकराचार्यों को शास्त्रार्थ की चुनौती देते हुए कहा कि स्वयंभू शंकराचार्य उनसे शास्त्रार्थ कर अपने ज्ञान को सिद्ध करें, वरना चारों पीठों के वास्तविक शंकराचार्यों से माफी मांगे। कहा कि शंकराचार्य का पद पीठासीन आचार्यो की योग्यता के कारण सम्मानीय पद है। योग्यता विहीन लोग मात्र पद की आड़ लेकर स्वयं को पूजवाना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि समाज को भी जागरूक रहकर ऐसे शंकराचार्यों की पहचान करनी होगी। जो स्वयं को शंकराचार्य घोषित कर इस पद का भी दुरुपयोग कर रहे हैं। उन्होंने प्रदेश सरकार व अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद से मांग की कि हरिद्वार में होने वाले महाकुंभ में केवल वास्तविक शंकराचार्यों को ही प्रवेश दिया जाए। फर्जी शंकराचार्यों को मान्यता न दी जाए।

सनातन धर्म विरोधी बात कर रहे हैं । आपने शिक्षा के प्रमाणपत्र की बात की है तो यह सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार तय किया जाने वाला पत्रक है जो सरकारी नौकरी के स्तर पर तो प्रमाण है पर प्राच्य विद्या में प्रमाण नहीं है ।

आज भारत में शंकराचार्य के भाष्य आदि ग्रन्थ पढाने वाले कितने सरकारी शिक्षक हैं आप बतायें । इन ग्रन्थों को तो परम्परा से गुरुकुल में पढा जाता है । काशी या दक्षिण भारत के दो चार सरकारी संस्थानों के अलावा अब इसका पठन-पाठन बन्द है । हमारे श्रीविद्यामठ, वाराणसी और द्वारका में जो सर्ववेदशाखाओं का पठन-पाठन कराया जाता है वह उत्तर और पश्चिम भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है ।

आपने स्कूली सर्टिफिकेट को प्रमाण मानते हुये उसे ही ज्ञान में प्रमाण माना है तो शास्त्रार्थ के लिये यह कहीं अनिवार्य नहीं है कि वादी-प्रतिवादी के पास स्कूली सर्टिपिकेट भी हो ।अनिवार्य तो यह है कि वह उन प्रश्नों का उत्तर दे जो शास्त्रसम्मत हों ।

आप बार-बार राजनीति से दूर रहने की बात करते हैं क्या आप जानते हैं कि राजनीति किसे कहते

NEWS 129.com New Era of Journalism

इस संन्यासी ने आरएसएस से जुड़े संत को बताया फर्जी शंकराचार्य, दी ये चुनौती

Swami Sri Govindanand Saraswati challenged Swami Rajrajeshwarsharm

Posted on June 17, 2019 Author news129.com चंद्रशेखर जोशी।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुडे और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत से सीधे संपर्क रखने वाले हरिद्वार के चर्चित संत स्वामी राजराजेश्वराश्रम महाराज को खुली चुनौती देते हुए एक संन्यासी ने हरिद्वार में प्रेस वार्ता कर आरोप लगाया कि वो फर्जी शंकराचार्य हैं और उन्हें अपने नाम के आगे शंकराचार्य लगाने का कोई अधिकार नहीं है। स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने कहा कि स्वामी राजराजेश्वराश्रम फर्जी शंकराचार्य है ये साबित करने के लिए वो स्वामी राजराजेश्वराश्रम से शास्त्रार्थ करने को तैयार हैं।
यही नहीं स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने स्वामी राजराजेश्वराश्रम के अलावा हरिद्वार के दूसरे बडे संत स्वामी अच्युतानंद महाराज को भी चुनौती देते हुए कहा कि वो भी अपने नाम के आगे शंकराचार्य नहीं लिख सकते हैं। दोनों संतों को जब वो चाहे अपने दावों को शास्त्रार्थ कर चुनौती दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि वो दोनों संतों से इस मसले पर शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार हैं।
आपको बता दें कि देश भर में शंकराचार्य पद की चार पीठें हैं जबकि कई बडे संत अपने नाम के आगे शंकराचार्य लगाते हैं।
गौरतलब है कि स्वामी राजराजेश्वराश्रम का नाम हरिद्वार के बडे संतों में शुमार हैं। कनखल में उनका आश्रम हैं और उनके आश्रम में भाजपा और संघ के कई बडे नेता अक्सर आते रहते हैं। वहीं स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि वो कर्नाटक से आते हैं और धर्म में फैल रही कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं।
http://news129.com/uttarakhand/swami-govindanand-challenged-swami-rajrajeshwarsharm/

जागरण | MENU | राज्य चुनें | वीडियो | मार्केट प्लेस

ताज़ा | राष्ट्रीय | स्पेशल | दुनिया | क्रिकेट | ऑटो | विश्वास News | मनोरंजन | पॉलिटिक्स | बिजनेस | टेक ज्ञान

अच्युतानंद व राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती

Publish Date:Mon, 17 Jun 2019 08:56 PM (IST)

जागरण संवाददाता, हरिद्वार: शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती के शिष्य स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने स्वामी अच्युतानंद तीर्थ और जगदगुरू राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। दोनों संतों को बकायदा रजिस्टर्ड डाक से चिट्ठी भेजी गई है, जिसमें एक सप्ताह का अल्टीमेटम दिया गया है। प्रेस क्लब में पत्रकारों से वार्ता करते हुए स्वामी गोविदानंद सरस्वती ने दोनों संतों के खुद को जगद्गुरु व शंकराचार्य कहने पर भी सवाल उठाए हैं।

पत्रकारों से वार्ता करते स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने कहा कि देश में चार शंकराचार्य पीठ हैं, लेकिन दर्जनों लोग खुद को शंकराचार्य घोषित कर श्रद्धालु भक्तों को गुमराह कर रहे हैं। अपूज्य लोगों की पूजा होने से धर्म को हानि पहुंच रही है। उन्होंने पंपलेट जारी करते हुए स्वामी अच्युतानंद तीर्थ और जगदगुरू राज राजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती दी और कहा कि दोनों संत आकर अपना ज्ञान सिद्ध करें, वरना चारों पीठों के वास्तविक शंकराचार्यो से माफी मांगे। कहा कि शंकराचार्य का पद पीठासीन आचार्यो की योग्यता के कारण सम्मानीय पद है। आचार्य परमात्मा का स्वरूप है। इनसे सामान्य मनुष्य की भांति व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। समाज को भी जागरूक रहकर ऐसे शंकराचार्यो की पहचान करनी होगी। जोकि स्वयं को शंकराचार्य घोषित कर इस पद का भी दुरूपयोग कर रहे हैं। धर्मनगरी में भी कई अखाड़े आश्रमों में स्वयंभू शंकराचार्य घोषित कर देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु भक्तों को धर्म की गलत जानकारी देकर धन अर्जित करने में लगे हुए हैं। समाज में विघटन का माहौल भी बन रहा है। इसके लिए हिदू समाज को जागरूक होना पड़ेगा।

ऐसे शंकराचार्यो को बेनकाब किया जाएगा। निरंतर इनके खिलाफ अभियान चलाकर देश भर में जनजागरूकता भी पैदा की जाएगी। उन्होंने प्रदेश सरकार व अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद से मांग की कि हरिद्वार में होने वाले महाकुंभ में केवल वास्तविक शंकराचार्यो को ही प्रवेश दिया। फर्जी तौर पर खुद को शंकराचार्य घोषित करने वालों को शंकराचार्य के तौर पर मान्यता न दी जाए।

लोकसभा चुनाव और क्रिकेट से संबंधित अपडेट पाने के लिए डाउनलोड करें जागरण एप

Posted By: Jagran

शास्त्रार्थ की चुनौती

हरिद्वार : शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती के शिष्य स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने स्वामी अच्युतानंद तीर्थ और जगदगुरू राजराजेश्वराश्रम को शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। दोनों संतों को बकायदा रजिस्टर्ड डाक से चिट्ठी भेजी गई है, जिसमें एक सप्ताह का अल्टीमेटम दिया गया है। प्रेस क्लब में पत्रकारों से वार्ता करते हुए स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने दोनों संतों के खुद को जगद्‌गुरु व शंकराचार्य कहने पर भी सवाल उठाए हैं। स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने कहा कि देश में चार शंकराचार्य पीठ हैं, लेकिन दर्जनों लोग खुद को शंकराचार्य घोषित कर श्रद्धालु भक्तों को गुमराह कर रहे हैं। (संस)

हैं ? यह राजनीति हमारे प्राच्यविद्या के ग्रन्थों का विषय है जिसे ऋषियों ने प्रकट किया है और उसके मानक तय किये हैं । आप जैसे लोग तो उस शुद्ध राजनीति से अनभिज्ञ होकर उसे दलगत बनाकर दलदल बनाने में लगे हैं । भारत से गौहत्या बन्द करके गौमांस निर्यात बन्द किया जाये । स्कूलों में रामायण, महाभारत की शिक्षा दी जाये, गंगा को अविरल और निर्मल किया जाये, खाद्यान्नों में मिलावट बन्द की जाये, नाबालिग कन्याओं से होने वाली क्रूरता बन्द की जाये, मुस्लिम साईं की पूजा हिन्दू न करे यह सब कुछ कहना अनुचित है और राजनीति है तो कृपया स्वामी अच्युतानन्द ही बतावें कि उचित क्या है ? –अस्तु ।

मैं, स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती दण्डी सन्यासी होने के नाते यह आवश्यक समझता हूं कि आचार्यों को अपमानित न किया जाये ।

श्रीमद् भागवत में लिखा है–

‘आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् ।
न मर्त्यबुद्ध्याऽसूयेत सर्वदेवमयो गुरुः’ ।

आचार्य परमात्मा का स्वरूप है इनसे सामान्य मनुष्य की भांति व्यवहार न करें । अच्युतानन्द स्वयं को तीर्थ कहते हैं जो कि शारदापीठ, द्वारका का सन्यासी होता है । तो अपने पीठाचार्य के विद्यमान रहते ही उनके स्थान पर स्वयं को वहां का आचार्य घोषित कर लेना, उनको निर्देश देना धृष्टता है । इन सब बातों से मेरा हृदय दुःखित है । इसलिये मैं शास्त्रार्थ की चुनौती दे रहा हूं । आप शास्त्रार्थ करने वाले की योग्यता का प्रमाणपत्र चाहते हैं तो इसका प्रमाण शास्त्रार्थ से ही हो जायेगा । क्योंकि मैं आपसे संस्कृत भाषा में ही शास्त्रार्थ करूंगा ।

जो भी प्रश्न मैं करूंगा उसका उत्तर आपको संस्कृत में ही देना होगा । आधार १ग्रन्थ– व्याकरण शास्त्र, छान्दोग्योपनिषद् , मठाम्नाय–महानुशासन एवं ललितासहस्रनाम आदि होंगे । पूज्य ज्योतिष्पीठ और

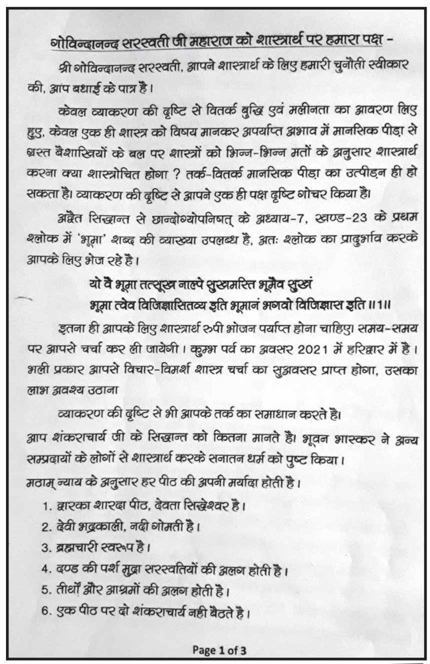

गोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज को शास्त्रार्थ पर हमारा पक्ष -

श्री गोविन्दानन्द सरस्वती, आपने शास्त्रार्थ के लिए हमारी चुनौती स्वीकार की, आप बधाई के पात्र है।

केवल व्याकरण की दृष्टि से वितर्क बुद्धि एवं मलीनता का आवरण लिए हुए, केवल एक ही शास्त्र को विषय मानकर अपर्याप्त अभाव में मानसिक पीड़ा से ग्रस्त बैशाखियों के बल पर शास्त्रों को भिन्न-भिन्न मतों के अनुसार शास्त्रार्थ करना क्या शास्त्रोचित होगा ? तर्क-वितर्क मानसिक पीड़ा का उत्पीड़न ही हो सकता है। व्याकरण की दृष्टि से आपने एक ही पक्ष दृष्टि गोचर किया है।

अद्वैत सिद्धान्त से छान्दोग्योपनिषत् के अध्याय-7, खण्ड-23 के प्रथम श्लोक में 'भूमा' शब्द की व्याख्या उपलब्ध है, अतः श्लोक का प्रादुर्भाव करके आपके लिए भेज रहे है।

यो वै भूमा तत्सूख नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं
भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमानं भगवो विजिज्ञास इति ॥1॥

इतना ही आपके लिए शास्त्रार्थ रुपी भोजन पर्याप्त होना चाहिए। समय-समय पर आपसे चर्चा कर ली जायेगी। कुम्भ पर्व का अवसर 2021 में हरिद्वार में है। भली प्रकार आपसे विचार-विमर्श शास्त्र चर्चा का सुअवसर प्राप्त होगा, उसका लाभ अवश्य उठाना

व्याकरण की दृष्टि से भी आपके तर्क का समाधान करते है।

आप शंकराचार्य जी के सिद्धान्त को कितना मानते है। भूवन भास्कर ने अन्य सम्प्रदायों के लोगों से शास्त्रार्थ करके सनातन धर्म को पुष्ट किया।

मठाम् न्याय के अनुसार हर पीठ की अपनी मर्यादा होती है।

1. द्वारका शारदा पीठ, देवता सिद्धेश्वर है।
2. देवी भद्रकाली, नदी गोमती है।
3. ब्रह्मचारी स्वरूप है।
4. दण्ड की पर्श मुद्रा सरस्वतियों की अलग होती है।
5. तीर्थों और आश्रमों की अलग होती है।
6. एक पीठ पर दो शंकराचार्य नही बैठते है।

Page 1 of 3

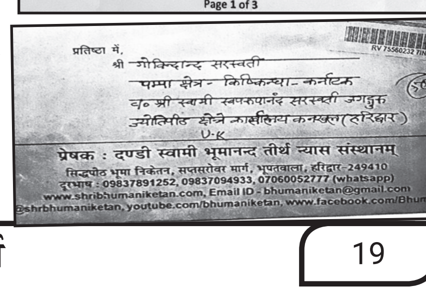

RV 75560232 7IN

प्रतिष्ठा में,
श्री गोविन्दानन्द सरस्वती
पम्पा क्षेत्र- किष्किन्धा- कर्नाटक
व० श्री स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जगद्गुरु
ज्योतिपीठ क्षेत्रे कार्यालय कनखल (हरिद्वार)
U.K

प्रेषक : दण्डी स्वामी भूमानन्द तीर्थ न्यास संस्थानम्
सिद्धपीठ भूमा निकेतन, सप्तसरोवर मार्ग, भूपतवाला, हरिद्वार-249410
दूरभाष : 09837891252, 09837094933, 07060052777 (whatsapp)
www.shribhumaniketan.com, Email ID - bhumaniketan@gmail.com
@shrbhumaniketan, youtube.com/bhumaniketan, www.facebook.com/Bhuma

शारदापीठ, द्वारका के जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज हरिद्वार के प्रवास पर हैं । अच्युतानन्द तीर्थ ने सर्वप्रथम अखबारों में उनके खिलाफ अनर्गल वक्तव्य देना प्रारम्भ किया । स्वरूप से ही कालनेमि की भांति लगने वाले, निर्लज्जता और मूर्खता के मूर्तिमान् स्वरूप स्वामी अच्युतानन्द को एवं हरिद्वार निवासी राजराजेश्वराश्रम को जो कि स्वयं को शारदापीठ, द्वारका का शंकराचार्य कहते हैं यह पत्रक भेजा जा रहा है कि आप दोंनों अपनी स्वयं की उपाधि के औचित्य पर हमसे शास्त्रार्थ करें ।

प्रकृत विषय यह है जिसका उत्तर मांागा गया है कि- शास्त्र के अनुसार भूमापीठ की स्थिति क्या है ? इसकी सिद्धि कैसे होगी ? शंकराचार्य का अभिषेक मठाम्नाय महानुशासन के आधार पर होगा या अखबारों के आधार पर ? न कि यह कि कौन किसका समर्थन करता है कौन किसका विरोध करता है । हमने स्वामी अच्युतानन्द पर या राजराजेश्वराश्रम पर कोई व्यक्तिगत आक्षेप नहीं किया है किन्तु कौन मूर्ख और कौन विद्वान् है यह तो शास्त्रार्थ से ही तय होगा । सर्टिफिकेट से नहीं । आप दोनों शारदापीठ, द्वारका के संन्यासी तीर्थ एवं आश्रम हैं । वर्तमान में शारदापीठ, द्वारका के मान्य शंकराचार्य पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज हैं । अतः राजराजेश्वराश्रम बतावें, वे स्वयं को कहां का शंकराचार्य ख्यापित करते हैं ?

उत्तर न दिये जाने की स्थिति में आगे की स्थिति पर विचार किया जावेगा ।

प्रेषक-

स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती

ज्येष्ठ शुक्ल १३ विक्रमी २०७६

१५ जून २०१९

सम्पर्क सूत्र - ८७६२७११११३

ईमेल-govindanandasaraswati@gmail.com

आजाद कश्मीर में प्राचीन शारदा पीठ है और कश्मीर के श्रीनगर में आदि जगद्गुरु शंकराचार्य टीला है। अपने बाहुबल (शास्त्रार्थ) के बल पर अन्य साधनों से उन पर आधिपत्य करके दिखाओं, तब वास्तविक शास्त्रार्थ का अर्थ होगा। यदि यें दोनों चीजें आपने शास्त्रार्थ के द्वारा या शासकीय व्यवस्था के द्वारा ग्रहण कर लिये तो हम समझेंगे कि वास्तविक गोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज भारतवर्ष के एक शास्त्रार्थी महापुरुष है। अन्यथा तो केवल व्यर्थ की शास्त्रार्थ रुपी मानसीक पीड़ा को शास्त्रार्थ का स्वरूप माना जायेगा।

ब्रह्माचारी सहजानन्द जी ने बयान दिया था न कि गोविन्दानन्द जी ने दिया था। गोविन्दानन्द जी ने मानसिक पीड़ा का परिचय दिया है :-

इति -

<u>अब इस पत्र का व्याकरणात्मक दृष्टि से अवलोकन करें।</u>

- लोक में संज्ञावाची शब्द बहुधा देखने में आते है, जिन्हें व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध कहा जा सकता है। यथा - हनुमान मंदिर, हनुमान चालीसा। यहाँ हुनमान चालीसा न होकर 'हनुमच्चालीसा' होना चाहिए।

क्या गोस्वामी तुलसीदास संस्कृतज्ञ नही थे ? ऐसे अनेक महात्माओं के नामों में ऐसा देखा जाता है।

- **'भूमा पीठ'** - भूम+अपीठ में नञ् (अ) अभाव अर्थ में ही क्यों लिया जाये? जबकि नञ् के छः अर्थ होते है। नञ् को सादृश्यार्थक मानने पर अपीठ का अर्थ पीठ भिन्न-पीठ सदृश अर्थात् उप-पीठ हो जायेगा।

- **'भूमापीठ'** शब्द में यह 'भूमा' स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज का बोधक है, ऐसा मानना चाहिए। नाम के एकदेश का ग्रहण है-'भूमा'। नामग्रहण में नाम के एकदेश का भी ग्रहण होता है-**'नामग्रहणे नामैकदेशोऽपि गृह्यते'**। यथा-सत्यभामा, देवदत्तः। सत्यभामा के लिए सत्या या भामा का प्रयोग पुराणादि में है। देवदत्त न बोलकर देव या दत्त बोल दिया जाता है। **'बलस्य भुजौ पाताम्'**- में बलराम न कहकर केवल बल कर दिया गया है। शंकराचार्य दिग्विजय के स्थान पर जैसे 'शंकर दिग्विजय' का प्रयोग है, वैसे ही यह 'भूमा' अर्थात् स्वामी श्री भूमानन्द जी महाराज की पीठ

(8)

(स्थान) है। ऐसा अर्थ करने पर भी 'भूमापीठ' को अशुद्ध या विवक्षितार्थ विरुद्ध नही कहा जा सकता।

- **'भूमापीठ'** में नञ् समास ही क्यों माना जाये? क्यों नही-**ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाऽभिविधौ च यः।** 'कारिका' के अनुसार ईषदर्थ (अल्प अर्थ में) अथवा अपिविधि अर्थ में आङ्. (आ) मानकर 'भूमा-आपीठ' बनेगा। भूम्ना आपीठम् समास करने पर भी भूम-अपीठ न होकर भूमापीठ शब्द सिद्ध होगा।

- **'यो वै भूमा तत्सुखम्'** इत्यादि उपनिषद् वाक्यों में 'भूमा' शब्द परमात्मा वाची है। साधकों के लिए 'भूमा' साध्य है और साधन भी। परमात्मा प्राप्ति साध्य और परमात्म चिन्तन साधन। ऐसा स्थान जहाँ 'भूमा' परमात्मा प्राप्त्यर्थ ब्रह्मचिन्तन होता रहा है। वह स्थान 'भूमा पीठ' है।

कौन नही जानता- स्वामी श्री दामोदरानन्द तीर्थ जी महाराज (मारवाड़ी स्वामी) पू0 जगद्गुरु जी महाराज, स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी महाराज, स्वामी श्री लक्ष्येश्राश्रम जी महाराज, स्वामी श्री सुखबोधाश्रम जी महाराज प्रभृति ब्रह्मवित् यति प्रवरों के द्वारा ब्रह्मचिन्तन, ब्रह्मविद्या, पठन-पाठन प्रवचन होता था। चातुर्मास्य दिवसों में ब्रह्मसूत्र-भामती, पंचदशी अद्वैत सिद्धि आदि ग्रन्थों पर विशद विवेचन-प्रवचन प्रवाहित रहता था। पूज्य स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज के सान्निध्य में भूमा अर्थात् ब्रह्म समाराधन पीठ, स्थान, निकेतन को भूमापीठ कहने पर क्या आपत्ति है ?

'अधीश्वर' जोड़ देने पर भूमा पीठाधीश्वर हो जाता है। अधि-पश्चात् ईश्वरः-अधीश्वरः, यहाँ ईश्वर का अर्थ संरक्षक, संचालक होने पर पीठाधीश्वर शब्द अनौचित्य नहीं है। 'अधि' का अर्थ है, पश्चात् अर्थात् स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज के बाद उस पीठ या स्थान का सर्वविध संचालन स्वामी श्री अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज कर रहे है। अतः उन्हें 'भूमापीठाधीश्वर' कहा जाना सर्वथा न्यायोचित है।

दिनांक- 21 जून, 2019 स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ
श्री विक्रमी सम्वत् 2076 शाके 1941
आषाढ, कृष्ण, चतुर्थी, शुक्रवार, श्रवण नक्षत्र।

Page 3 of 3

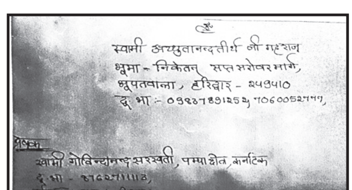

(इस पत्र को प्राप्त कर स्वामी अच्युतानन्द जी ने गोविन्दानन्द जी को हिन्दी में एक पत्र लिखा जो पाठकों के अवलोकनार्थ अग्रिम पंक्तियों में निबद्ध है ।)

श्रीगोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज को शास्त्रार्थ पर हमारा पक्ष

श्रीगोविन्दानन्द सरस्वती, आपने शास्त्रार्थ के लिये हमारी चुनौती स्वीकार की, आप बधाई के पात्र हैं ।

केवल व्याकरण की दृष्टि से वितर्क बुद्धि एवं मलीनता का आवरण लिये हुये, केवल एक ही शास्त्र को विषय मानकर अपर्याप्त अभाव में मानसिक पीड़ा से ग्रस्त बैशाखियों के बल पर शास्त्रों को भिन्न-भिन्न मतों के अनुसार शास्त्रार्थ करना क्या शास्त्रोचित होगा ? तर्क-वितर्क मानसिक पीड़ा का उत्पीडन ही हो सकता है । व्याकरण की दृष्टि से आपने एक ही पक्ष दृष्टिगोचर किया है ।

अद्वैत सिद्धान्त से छान्दोग्योपनिषत् के अध्याय - ७, खण्ड - २३ के प्रथम श्लोक में 'भूमा' शब्द की व्याख्या उपलब्ध है, अतः श्लोक का प्रादुर्भाव करके आपके लिये भेज रहे हैं ।

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमात्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमानं भगवो विजिज्ञास इति ।। १।।

इतना ही आपके लिये शास्त्रार्थ रूपी भोजन पर्याप्त होना चाहिये । समय-समय पर आपसे चर्चा कर ली जायेगी। कुम्भ पर्व का अवसर २०२१ में हरिद्वार में है । भली प्रकार आपसे विचार-विमर्श शास्त्रचर्चा का सुअवसर प्राप्त होगा, उसका लाभ अवश्य उठाना ।

व्याकरण की दृष्टि से भी आपके तर्क का समाधान करते हैं ।

आप शंकराचार्य जी के सिद्धान्त को कितना मानते हैं । भुवनभास्कर ने अन्य सम्प्रदायों के लोगों से शास्त्रार्थ करके सनातनधर्म को पुष्ट किया । मठाम् न्याय के अनुसार हर पीठ की अपनी मर्यादा होती है ।

१. द्वारका शारदापीठ, देवता सिद्धेश्वर हैं ।

२. देवी भद्रकाली, नदी गोमती है ।

३. ब्रह्मचारी स्वरूप है ।

४. दण्ड की पर्श मुद्रा सरस्वतियों की अलग होती है ।

५. तीर्थों और आश्रमों की अलग होती है ।

६. एक पीठ पर दो शंकराचार्य नहीं बैठते हैं ।

आजाद कश्मीर में प्राचीन शारदापीठ है और कश्मीर के श्रीनगर में आदि जगद् गुरु शंकराचार्य टीला है । अपने बाहुबल (शास्त्रार्थ) के बल पर अन्य साधनों से उन पर आधिपत्य करके दिखाओ, तब वास्तविक शास्त्रार्थ का अर्थ होगा । यदि ये दोनों चीजें आपने शास्त्रार्थ के द्वारा या शासकीय व्यवस्था के द्वारा ग्रहण कर लिये तो हम समझेंगे कि वास्तविक गोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज भारत वर्ष के एक शास्त्रार्थी महापुरुष हैं । अन्यथा तो केवल व्यर्थ की शास्त्रार्थ रूपी मानसिक पीडा को शास्त्रार्थ का स्वरूप माना जायेगा ।

ब्रह्माचारी सहजानन्द जी ने बयान दिया था न कि गोविन्दानन्द जी ने दिया था । गोविन्दानन्द जी ने मानसिक पीडा का परिचय दिया है –

इति ।

अब इस पत्र का व्याकरणात्मक दृष्टि से अवलोकन करें –

लोक में संज्ञावाची शब्द बहुधा देखने में आते हैं, जिन्हें व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध कहा जा सकता है । यथा– हनुमान मंदिर, हनुमान चालीसा । यहाँ हनुमान चालीसा न होकर 'हनुमच्चालीसा' होना चाहिये ।

क्या गोस्वामी तुलसीदास संस्कृतज्ञ नहीं थे? ऐसे अनेक महात्माओं के नामों में ऐसा देखा जाता है ।

'भूमापीठ'–भूम+अपीठ में नञ् (अ) अभाव अर्थ में ही क्यों लिया जाये? जबकि नञ् के छः अर्थ होते हैं । नञ् को सादृश्यार्थक मानने पर अपीठ का अर्थ पीठभिन्न – पीठसदृश अर्थात् उप–पीठ हो जायेगा ।

'भूमापीठ' शब्द में यह 'भूमा' स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज का बोधक है , ऐसा मानना चाहिये । न कि एकदेश का ग्रहण है –'भूमा' ।

नामग्रहण में नाम के एकदेश का भी ग्रहण होता है – **'नामग्रहणे नामैकदेशोऽपि गृह्यते'। यथा– सत्यभामा, देवदत्तः** । सत्यभामा के लिये सत्या या भामा का प्रयोग पुराण आदि में हैं । देवदत्त न बोलकर देव या दत्त बोल दिया जाता है । **'बलस्य भुजौ पाताम् '** – में बलराम न कहकर केवल बल कर दिया गया है । शंकराचार्य दिग्विजय के स्थान पर जैसे **'शंकर–दिग्विजय'**का प्रयोग है , वैसे ही यह 'भूमा' अर्थात् स्वामी श्री भूमानन्द जी महाराज की पीठ (स्थान) है । ऐसा अर्थ करने पर भी 'भूमापीठ' को अशुद्ध या विवक्षितार्थ विरुद्ध नहीं कहा जा सकता ।

'भूमापीठ' में नञ् समास ही क्यों माना जाये? क्यों नहीं ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ

च यः । 'कारिका' के अनुसार ईषदर्थ (अल्प अर्थ में) अथवा अपि विधि अर्थ में आङ् (आ) मानकर 'भूमा–आपीठ' बनेगा । भूम्ना आपीठम् समास करने पर भी भूम–अपीठ न होकर भूमापीठ शब्द सिद्ध होगा ।

'यो वै भूमा तत्सुखम् ' इत्यादि उपनिषद् वाक्यों में 'भूमा' शब्द परमात्मा वाची है । साधकों के लिये 'भूमा' साध्य है और साधन भी । परमात्मा प्राप्ति साध्य और परमात्मचिन्तन साधन । ऐसा स्थान जहाँ 'भूमा' परमात्मा प्राप्त्यर्थ ब्रह्मचिन्तन होता रहा है । वह स्थान 'भूमापीठ' है ।

कौन नहीं जानता– स्वामी श्री दामोदरानन्द तीर्थ जी महाराज (मारवाडी स्वामी) पू. जगद्गुरु जी महाराज, स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी महाराज, स्वामी श्री लक्ष्येश्वराश्रम जी महाराज, स्वामी श्री सुखबोधाश्रम जी महाराज प्रभृति ब्रह्मवित् यति प्रवरों के द्वारा ब्रह्मचिन्तन, ब्रह्मविद्या पठन–पाठन प्रवचन होता था । चातुर्मास्य दिवसों में ब्रह्मसूत्र–भामती, पंचदशी, अद्वैतसिद्धि आदि ग्रन्थों पर विशद विवेचन–प्रवचन प्रवाहित रहता था । पूज्य स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज के सान्निध्य में भूमा अर्थात् ब्रह्मसमाराधन पीठ, स्थान, निकेतन को 'भूमापीठ' कहने पर क्या आपत्ति है ?

'अधीश्वर' जोड देने पर भूमा पीठाधीश्वर हो जाता है । अधि–पश्चात् ईश्वरः अधीश्वरः, यहां ईश्वर का अर्थ संरक्षक, संचालक होने पर पीठाधीश्वर शब्द अनौचित्य नहीं है । 'अधि' का अर्थ है, पश्चात् अर्थात् स्वामी श्री भूमानन्द तीर्थ जी महाराज के बाद उस पीठ या स्थान का सर्वविध संचालन स्वामी श्री अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज कर रहे हैं । अतः उन्हें 'भूमापीठाधीश्वर' कहा जाना सर्वथा न्यायोचित है ।

– स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ

दिनांक २१ जून २०१९
श्रीविक्रमी संवत् २०७६ शाके १९४१
आषाढ, कृष्ण, चतुर्थी, शुक्रवार, श्रवण नक्षत्र ।

(इस पत्र को प्राप्त करने पर स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती जी ने पुनः संस्कृत भाषा में इस पत्र का उत्तर उन्हें प्रेषित किया । जो यथावत् आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत है)

।।श्री शङ्कराचार्यो विजयते ।।

अयि भोः ! विद्वद्वर्याः विदाङ्कुर्वन्तु ! प्रकृते शास्त्रार्थस्य मुख्योऽयं विषयः भूमापीठ इति शब्दस्साधीयान् ? न वा ? इति ।

तत्र च अस्माभि:पूर्वमेव भूमापीठ शब्द: विवक्षितार्थ बोधको नास्ति । अपितु विरुद्धार्थ बोधक:इति प्रत्यपादि । तथाहि भूमन् शब्द: इमनिच् प्रत्ययान्त:। अत:प्रकृतिभागे नास्त्येव दीर्घ:। केवलं तस्य भूमन् शब्दस्य प्रथमा विभक्त्येक वचनादि सर्वनामस्थानेषु एव दीर्घस्समायाति नान्तत्वात् । सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इति सूत्रात्। तथाच प्रकृति स्वरूपे नैवास्ति दीर्घ: । अतो भूमरूपेत्यादिवत् भूमपीठ इत्येव भवति। नतु भूमापीठ इति । प्रकृत लेखे अच्युतानन्द तीर्थेन तदनुयायिना च मिलित्वा महान् असम्बद्धप्रलाप: बहुधा कृतो विद्यते ।

(१) यदुक्तं शास्त्रार्थ: मनस:पीडाकारक इति । तन्न । यत: " वादे वादे जायते तत्त्वबोध:" इति सूक्त्या शास्त्रार्थ: मन:पीडानिवारक: शास्त्रज्ञानाम् । अच्युतानन्द तीर्थ सदृशानामशास्त्रज्ञानामथवा शास्त्रगन्धविरहितानां कामं भवतु शास्त्रार्थ:मन:पीडाकारक:।

(२) अन्यदप्युक्तं केवल व्याकरणेन शास्त्रार्थसिद्धिर्नभवति इति । तदपि मन्दम् । यत: वेदस्य यान्यङ्गान्युपाङ्गानि च तानि सर्वाणि वेदार्थ परिज्ञानाय वेदार्थतात्पर्यनिर्णयाय च समुपकुर्वन्ति। अन्यथा अङ्गानामङ्गत्वमेव न स्यात् । प्रकृते यो विचार: स च व्याकरण सम्बद्ध: । छान्दोग्ये षष्ठेऽध्याये उत्तमाधिकारिणां कृते सद्विद्या प्रस्तुता आसीत् । ततश्च सप्तमेऽध्याये मध्यमाधिकारिणां कृते भूमविद्या प्रस्तुता समस्ति । ततश्चाष्टमेऽध्याये मन्दाधिकारिणां कृते समुपदिष्टा दहरब्रह्मविद्या इत्ययं विभाग:विदितचरो विद्वद्भि:। तत्र सप्तमे या भूमविद्या निर्दिष्टा तत्र भूम्नो लक्षणं बोधनीयमिति

११५

भो: स्वामी अच्युतानन्दतीर्थवर्या:
हरिद्वार

।।श्री शङ्कराचार्यो विजयते ।।

अयि भो: ! विद्वद्वर्या: विदाङ्कुर्वन्तु ! प्रकृते शास्त्रार्थस्य मुख्योऽयं विषय: भूमापीठ इति शब्दस्साधीयान् ? न वा ? इति ।

तत्र च अस्माभि:पूर्वमेव भूमापीठ शब्द: विवक्षितार्थ बोधको नास्ति । अपितु विरुद्धार्थ बोधक:इति प्रत्यपादि । तथाहि भूमन् शब्द: इमनिच् प्रत्ययान्त:। अत:प्रकृतिभागे नास्त्येव दीर्घ:। केवलं तस्य भूमन् शब्दस्य प्रथमा विभक्त्येक वचनादि सर्वनामस्थानेषु एव दीर्घस्समायाति नान्तत्वात् । सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इति सूत्रात् । तथाच प्रकृति स्वरूपे नैवास्ति दीर्घ: । अतो भूमरूपेत्यादिवत् भूमपीठ इत्येव भवति । नतु भूमापीठ इति । प्रकृत लेखे अच्युतानन्द तीर्थेन तदनुयायिना च मिलित्वा महान् असम्बद्धप्रलाप: बहुधा । कृतो विद्यते ।

(१) यदुक्तं शास्त्रार्थ: मनस:पीडाकारक इति । तन्न । यत: " वादे वादे जायते तत्त्वबोध:" इति सूक्त्या शास्त्रार्थ: मन:पीडानिवारक: शास्त्रज्ञानाम् । अच्युतानन्द तीर्थ सदृशानामशास्त्रज्ञानामथवा शास्त्रगन्धविरहितानां कामं भवतु शास्त्रार्थ:मन:पीडाकारक:।

(२) अन्यदप्युक्तं केवल व्याकरणेन शास्त्रार्थसिद्धिर्नभवति इति । तदपि मन्दम् । यत: वेदस्य यान्यङ्गान्युपाङ्गानि च तानि सर्वाणि वेदार्थ परिज्ञानाय वेदार्थतात्पर्यनिर्णयाय च समुपकुर्वन्ति । अन्यथा अङ्गानामङ्गत्वमेव न स्यात् । प्रकृते यो विचार: स च व्याकरण सम्बद्ध: । छान्दोग्ये षष्ठेऽध्याये उत्तमाधिकारिणां कृते सद्विद्या प्रस्तुता आसीत् । ततश्च सप्तमेऽध्याये मध्यमाधिकारिणां कृते भूमविद्या प्रस्तुता समस्ति । ततश्चाष्टमेऽध्याये मन्दाधिकारिणां कृते समुपदिष्टा दहरब्रह्मविद्या इत्ययं विभाग:विदितचरो विद्वद्भि:। तत्र सप्तमे या भूमविद्या निर्दिष्टा तत्र भूम्नो लक्षणं बोधनीयमिति श्रुति: " यत्र नान्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति " इत्यादिना समुदाजहार लक्षणम् । एवञ्च उपनिषद् ग्रन्थात् भूमशब्द: अवश्यमेव स्वीकृत: । तत: परं यस्यां यस्यां विभक्तौ व्यस्ततया समस्ततया वा भूमशब्द:प्रयोक्तव्य इति विवक्षु:मनसा निश्चित्य तं भूमशब्दं प्रयुञ्ज्यात् । तादृश निर्णय:व्याकरणाधीन: । अत: व्याकरण शास्त्र पुरस्कारेणैव निर्णेय: । भूमापीठ इत्यपशब्द:। अयं अच्युतानन्दोऽनेकवारं प्रबोधितोऽपि नैव ज्ञातुं समर्थोऽस्ति ।

(३) यदुक्तं शास्त्रार्थो कालान्तरे भवत्विति तन्न । यत: यथा रोग: शरीरे प्रवर्तमान: नैव उपेक्षणीय: तथैव दोष: न सर्वथा उपेक्षणीय:। सपद्येव शास्त्रार्थ खड्गेन चिकित्स्य: । अत: चातुर्मास्य पर्यन्तं कुम्भ पर्यन्तमिति कालप्रतीक्षा सर्वात्मना अयुक्ता ।

(४) प्रकृतासम्बद्धं प्रलप्यते वारं वारं यत्किञ्चित् तन्मन्दम् । यथा चतुर्षु मठेषु कुत्र के संन्यासिनो भवेयुरिति निर्णय: न कस्याऽप्यधीनेऽस्ति अत: देशकालप्रभावदोषेण दशसु नामसु षण्णामान:संन्यासिन:

(१) वन (२) अरण्य (३) पर्वत (४) पुरी (५) गिरि (६) सागर, इत्याख्या: अविच्छिन्न दण्डिसम्प्रदायात् सर्वात्मना विलुप्ता: एषामुद्धार:कथं शक्यते विलुप्तानाम् । अतो ज्योतिर्मठे पुरीजगन्नाथमठे च शङ्कराचार्या: न भवेयु: किम् ? परम्परां पश्य । अनेक कालत:ज्योतिष्पीठे ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिन: समलंकृता आसन् शङ्कराचार्या:। न केनापि धर्मज्ञेन आक्षेप:कृत: । तदनु तत्रैव पीठे कृष्णबोधाश्रमस्वामिन: विराजन्ते स्म । न तत्राऽपि कोऽप्याक्षेप: प्रादुरभूत्तादानीम् । तथैव पुरी जगन्नाथक्षेत्रे भारतीकृष्णतीर्थ प्रभृतय: शङ्कराचार्या:विराजन्त आसन् । एवमेव शृङ्गगिरिमठे अभिनवविद्यातीर्थ भारतीतीर्थ प्रभृतय: तीर्थनामान: शङ्कराचार्या: सन्दृश्यन्ते । किमर्थं सर्वमेतत्रालोच्यते। अथवा आलोचनाय समर्थो नासि ? प्रकृते (१) सरस्वती (२) भारती (३) तीर्थ (४) आश्रमनामान एव दण्डिसंन्यासिन:चत्वार:अविच्छिन्न परम्परया समुपलभ्यन्ते । अतस्तएव यथा योगं चतुर्षु पीठेषु श्रोत्रिया:ब्रह्मनिष्ठा:शङ्कराचार्या: भवेयु:। अत्र कस्ते क्लेश: ?

(५) यदुक्तं काश्मीरे सर्वज्ञपीठस्य उद्धार: कार्य इति तदिदं महदविचारितमस्ति । यत:विषयोऽयं सर्वकाराधीन:। न साधूनां संन्यासिनां विदुषामधीन:। किञ्च शङ्कराचार्यैर्महता समादरेण महानप्रयत्न:क्रियमाणो वर्तते । तत्सर्वं दिवान्धो न त्वं ज्ञातुमर्हसि । अतएवमनर्थप्रलापं सर्वथा परित्यज।

(६) यदुक्तं लोके अपशब्दा:दृश्यन्त इति तन्न । यत:प्रादेशिक भाषासु तज्जानां तत्समानामपभ्रष्टानां शब्दानां व्यवहार: अभीष्ट: । न तु संस्कृतलोके । किञ्च पीठाधीश्वराणां विषये । " न म्लेच्छितवै नापभाषितवै" इति निषेधस्य जागरूकत्वात् ।

(७) भूम + अपीठ इति यस्त्वया प्रत्यपादि तत्र नञ: सादृश्यार्थकत्वं स्वीकृत्य तत्सर्वथा मन्दम् । यत: पीठ सदृशस्य अपीठस्य भूमन् शब्देन सह कथं समास: स्यात् ? कश्च भवेदर्थ:? किञ्च समासविधायकं शास्त्रं किम् ? अत: इत: परं न कदापि त्वया प्रलपनीयमेवंविधम् ।

(८) यदुक्तं नामैकदेशग्रहणे नामग्रहणमिति तदप्यप्रस्तुतं । यत:भवद् गुरो:भूमानन्द स्वामिन:नाम्नि एकदेश:ह्रस्वान्तो भूमशब्द: । नतु दीर्घान्त:भूमाशब्द: । अतश्च ह्रस्वान्त भूमशब्देन सह पीठशब्दस्य समासे कृते भूमपीठ इत्येव सिद्ध्यति । न भूमापीठ इति ।

(९) यदुक्तं अभिविधौ आकारं स्वीकृत्य भूमापीठमिति समर्थयाम इति तदप्यसम्बद्धम् । यत:" तेन सहाभिविधि:" इति प्रकृते केन सह विवक्षित:अर्थ:? तस्मात् अयमपि पक्ष:न समीचीन:।

(१०) यदन्ते प्रलपितं अधीश्वर शब्देन सह भूमशब्दस्य समास इति । तत् अच्युतानन्दस्य अपाण्डित्यस्य पराकाष्ठा इति । यत: भूमशब्देन सह अधीश्वरशब्दस्य योजने भूमाधीश्वर:स्यात् । मध्ये पीठ शब्द एव नास्ति । किञ्च प्रकृते अधि: उपर्यर्थक: । न पश्चादर्थक: । अत: सर्वात्मना प्रलापभूयिष्ठेन अनेन लेखेन अच्युतानन्दस्य पराजय: सुनिर्णीत: । अच्युतानन्द पराजये पर्याप्तं प्रमाणं अच्युतानन्द लेख एवेऽति शम् ।

नारायणस्मरण

२२/०६/२०१९

स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती

श्री गोविन्दानन्द सरस्वती

सं. सू.:
8762711113
govindanandasaraswati@gmail.com

CS Scanned with

श्रुतिः " यत्र नान्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति " इत्यादिना समुदाजहार लक्षणम् । एवञ्च उपनिषद् ग्रन्थात् भूमशब्दः अवश्यमेव स्वीकृतः । ततः परं यस्यां यस्यां विभक्तौ व्यस्ततया समस्ततया वा भूमशब्दःप्रयोक्तव्य इति विवक्षुःमनसा निश्चित्य तं भूमशब्दं प्रयुञ्ज्यात् । तादृश निर्णयःव्याकरणाधीनः । अतः व्याकरण शास्त्र पुरस्कारेणैव निर्णेयः । भूमापीठ इत्यपशब्दः। अयं अच्युतानन्दोऽनेकवारं प्रबोधितोऽपि नैव ज्ञातुं समर्थोऽस्ति ।

(३) यदुक्तं शास्त्रार्थो कालान्तरे भवत्विति तन्न । यतः यथा रोगः शरीरे प्रवर्तमानः नैव उपेक्षणीयः तथैव दोषः न सर्वथा उपेक्षणीयः। सपद्येव शास्त्रार्थ खड्गेन चिकित्स्यः । अतः चातुर्मास्य पर्यन्तं   कुम्भ पर्यन्तमिति कालप्रतीक्षा सर्वात्मना अयुक्ता ।

(४) प्रकृतासम्बद्धं प्रलप्यते वारं वारं यत्किञ्चित् तन्मन्दम् । यथा चतुर्षु मठेषु कुत्र के संन्यासिनो भवेयुरिति निर्णयः न कस्याऽप्यधीनेऽस्ति अतः देशकालप्रभावदोषेण दशसु नामसु षण्णामानःसंन्यासिनः   (१) वन (२) अरण्य (३) पर्वत (४) पुरी (५) गिरि (६) सागर, इत्याख्याः अविच्छिन्न दण्डिसम्प्रदायात् सर्वात्मना विलुप्ताः एषामुद्धारःकथं शक्यते विलुप्तानाम् । अतो ज्योतिर्मठे पुरीजगन्नाथमठे च शङ्कराचार्याः न भवेयुः किम् ? परम्परां पश्य । अनेक कालतःज्योतिष्पीठे ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिनः समलंकृता आसन् शङ्कराचार्याः। न केनापि धर्मज्ञेन आक्षेपःकृतः । तदनु तत्रैव पीठे कृष्णबोधाश्रमस्वामिनः विराजन्ते स्म । न तत्राऽपि कोऽप्याक्षेपः प्रादुरभूत्तदानीम् । तथैव पुरी जगन्नाथक्षेत्रे भारतीकृष्णतीर्थ प्रभृतयः शङ्कराचार्याःविराजन्त आसन् । एवमेव शृङ्गगिरिमठे अभिनवविद्यातीर्थ भारतीतीर्थ प्रभृतयः तीर्थनामानः शङ्कराचार्याः सन्दृश्यन्ते । किमर्थं सर्वमेतन्नालोच्यते। अथवा आलोचनाय समर्थो नासि ? प्रकृते (१) सरस्वती (२) भारती (३) तीर्थ (४) आश्रमनामान एव दण्डिसंन्यासिनःचत्वारःअविच्छिन्न परम्परया समुपलभ्यन्ते । अतस्तएव यथा योगं चतुर्षु पीठेषु श्रोत्रियाःब्रह्मनिष्ठाःशङ्कराचार्याः भवेयुः। अत्र कस्ते क्लेशः ?

(५) यदुक्तं काश्मीरे सर्वज्ञपीठस्य उद्धारः कार्य इति तदिदं महदविचारितमस्ति । यतःविषयोऽयं सर्वकाराधीनः। न साधूनां संन्यासिनां विदुषामधीनः। किञ्च शङ्कराचार्यैर्महता समादरेण महानप्रयत्नःक्रियमाणो वर्तते । तत्सर्वं दिवान्धो न त्वं ज्ञातुमर्हसि । अतएवमनर्थप्रलापं सर्वथा परित्यज।

(६) यदुक्तं लोके अपशब्दाःदृश्यन्त इति तन्न । यतःप्रादेशिक भाषासु तज्जानां तत्समानामपभ्रष्टानां शब्दानां व्यवहारः अभीष्टः । न तु संस्कृतलोके । किञ्च पीठाधीश्वराणां विषये । " न म्लेच्छितवै नापभाषितवै" इति निषेधस्य जागरूकत्वात् ।

(७) भूम + अपीठ इति यस्त्वया प्रत्यपादि तत्र नञः सादृश्यार्थकत्वं स्वीकृत्य तत्सर्वथा

मन्दम् । यतः पीठ सदृशस्य अपीठस्य भूमन् शब्देन सह कथं समासः स्यात् ? कश्च भवेदर्थः? किञ्च समासविधायकं शास्त्रं किम् ? अतः इतः परं न कदापि त्वया प्रलपनीयमेवंविधम् ।

(८) यदुक्तं नामैकदेशग्रहणे नामग्रहणमिति तदप्यप्रस्तुतं । यतःभवद् गुरोःभूमानन्द स्वामिनःनाम्नि एकदेशःह्रस्वान्तो भूमशब्दः । नतु दीर्घान्तःभूमाशब्दः । अतश्च ह्रस्वान्त भूमशब्देन सह पीठशब्दस्य समासे कृते भूमपीठ इत्येव सिद्ध्यति । न भूमापीठ इति ।

(९) यदुक्तं अभिविधौ आकारं स्वीकृत्य भूमापीठमिति समर्थयाम इति तदप्यसम्बद्धम् । यतः'' तेन सहाभिविधिः'' इति प्रकृते केन सह विवक्षितःअर्थः? तस्मात् अयमपि पक्षःन समीचीनः।

(१०) यदन्ते प्रलपितं अधीश्वर शब्देन सह भूमशब्दस्य समास इति । तत् अच्युतानन्दस्य अपाण्डित्यस्य पराकाष्ठा इति । यतः भूमशब्देन सह अधीश्वरशब्दस्य योजने भूमाधीश्वरःस्यात् । मध्ये पीठ शब्द एव नास्ति । किञ्च प्रकृते अधिः उपर्यर्थकः । न पश्चादर्थकः । अतः सर्वात्मना प्रलापभूयिष्ठेन अनेन लेखेन अच्युतानन्दस्य पराजयः सुनिर्णीतः । अच्युतानन्द पराजये पर्याप्तं प्रमाणं अच्युतानन्द लेख एवेऽति शम् ।

नारायणस्मरण

स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती

२२/०६/२०१९

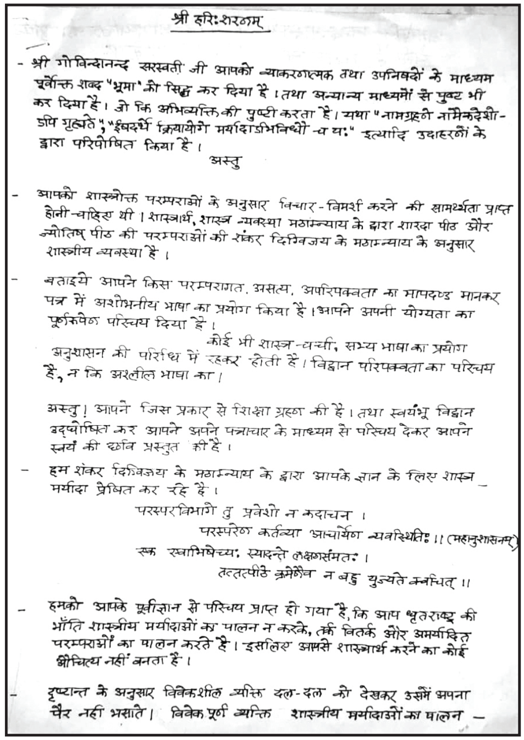
श्री हरिःशरणम्

- श्री गोविन्दानन्द सरस्वती जी आपको व्याकरणात्मक तथा उपनिषदों के माध्यम पूर्वोक्त शब्द "भूमा" को सिद्ध कर दिया है। तथा अन्यान्य माध्यमों से पुष्ट भी कर दिया है। जो कि अभिव्यक्ति की पुष्टी करता है। यथा "नामग्रहणे नामैकदेशोऽपि गृह्यते"; "ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाऽभिविधौ च यः" इत्यादि उदाहरणों के द्वारा परिपोषित किया है।

अस्तु

- आपको शास्त्रोक्त परम्पराओं के अनुसार विचार-विमर्श करने की सामर्थ्यता प्राप्त होनी चाहिए थी। शास्त्रार्थ, शास्त्र व्यवस्था मठाम्नाय के द्वारा शारदा पीठ और ज्योतिष् पीठ की परम्पराओं की शंकर दिग्विजय के मठाम्नाय के अनुसार शास्त्रीय व्यवस्था है।

- बताइये आपने किस परम्परागत, असत्य, अपरिपक्वता का मापदण्ड मानकर पत्र में अशोभनीय भाषा का प्रयोग किया है। आपने अपनी योग्यता का पूर्णरूपेण परिचय दिया है।

कोई भी शास्त्र-चर्चा, सभ्य भाषा का प्रयोग अनुशासन की परिधि में रहकर होती है। विद्वान परिपक्वता का परिचय है, न कि अश्लील भाषा का।

अस्तु! आपने जिस प्रकार से शिक्षा ग्रहण की है। तथा स्वयंभू विद्वान उद्घोषित कर आपने अपने पत्राचार के माध्यम से परिचय देकर आपने स्वयं की छवि प्रस्तुत की है।

- हम शंकर दिग्विजय के मठाम्नाय के द्वारा आपके ज्ञान के लिए शास्त्र-मर्यादा प्रेषित कर रहे है।

परस्परविभागे तु प्रवेशो न कदाचन ।
परस्परेण कर्तव्या आचार्येण व्यवस्थितिः ।। (महानुशासनम्)
एक स्वाभिषेच्यः स्यादन्ते लक्षणसंमतः ।
तत्तत्पीठे क्रमेणैव न बहु युज्यते क्वचित् ।।

- हमको आपके पूर्वज्ञान से परिचय प्राप्त हो गया है, कि आप धृतराष्ट्र की भाँति शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन न करके, तर्क वितर्क और अमर्यादित परम्पराओं का पालन करते है। इसलिए आपसे शास्त्रार्थ करने का कोई औचित्य नहीं बनता है।

- दृष्टान्त के अनुसार विवेकशील व्यक्ति दल-दल को देखकर उसमें अपना पैर नहीं भसाते। विवेकपूर्ण व्यक्ति शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन –

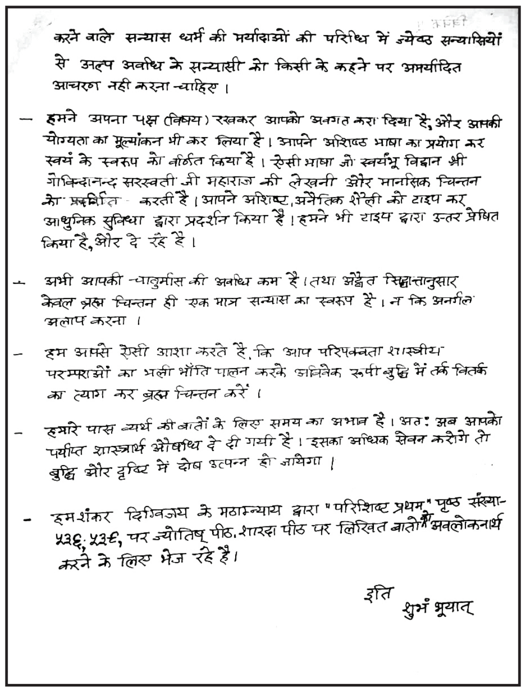
करने वाले सन्यास धर्म की मर्यादाओं की परिधि में ज्येष्ठ सन्यासियों से अल्प अवधि के सन्यासी को किसी के कहने पर अमर्यादित आचरण नही करना चाहिए।

- हमने अपना पक्ष (विषय) रखकर आपको अवगत करा दिया है, और आपकी योग्यता का मूल्यांकन भी कर लिया है। आपने अशिष्ठ भाषा का प्रयोग कर स्वयं के स्वरूप को वर्णित किया है। ऐसी भाषा जो स्वयंभू विद्वान श्री गोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज की लेखनी और मानसिक चिन्तन को प्रदर्शित करती है। आपने अशिष्ट, अनैतिक शैली को टाइप कर आधुनिक सुविधा द्वारा प्रदर्शन किया है। हमने भी टाइप द्वारा उत्तर प्रेषित किया है, और दे रहे है।

- अभी आपकी चातुर्मास की अवधि कम है। तथा अद्वैत सिद्धान्तानुसार केवल ब्रह्म चिन्तन ही एक मात्र सन्यास का स्वरूप है। न कि अनर्गल अलाप करना।

- हम आपसे ऐसी आशा करते है, कि आप परिपक्वता शास्त्रीय परम्पराओं का भली भाँति पालन करके अविवेक रूपी बुद्धि में तर्क वितर्क का त्याग कर ब्रह्म चिन्तन करें।

- हमारे पास व्यर्थ की बातों के लिए समय का अभाव है। अतः अब आपको पर्याप्त शास्त्रार्थ औषधि दे दी गयी है। इसका अधिक सेवन करोगे तो बुद्धि और दृष्टि में दोष उत्पन्न हो जायेगा।

- हम शंकर दिग्विजय के मठाम्नाय द्वारा "परिशिष्ट प्रथम" पृष्ठ संख्या-५३६, ५३८, पर ज्योतिष् पीठ, शारदा पीठ पर लिखित बातों को अवलोकनार्थ करने के लिए भेज रहे है।

इति
शुभं भूयात्

(इस पत्र के भेजे जाने पर **स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ** की तरफसे हाथ से लिखा एक पत्र जिसमें न तो कोई तारीख थी और न ही कोई नाम या हस्ताक्षर ही था, प्राप्त हुआ । जिसका चित्र और लिखी सामग्री प्रस्तुत है ।)

श्रीगोविन्दानन्द सरस्वती जी,

आपको व्याकरणात्मक तथा उपनिषदों के माध्यम पूर्वोक्त शब्द भूमा को सिद्ध कर दिया है । तथा अन्यान्य माध्यमों से पुष्ट भी कर दिया है जो कि अभिव्यक्ति की पुष्टी करता है । यथा नामग्रहणे नामैकदेशोऽपि गृह्यते । ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः ।' इत्यादि उदाहरणों के द्वारा परिपोषित किया है । अस्तु ।

आपको शास्त्रोक्त परम्पराओं के अनुसार विचार विमर्श करने की सामर्थ्यता प्राप्त होनी चाहिये थी । शास्त्रार्थ, शास्त्र-व्यवस्था मठाम्नाय के द्वारा शारदापीठ और ज्योतिष्पीठ की परम्पराओं की शंकरदिग्विजय के मठाम् न्याय के अनुसार शास्त्रीय व्यवस्था है ।

बताइये आपने किस परम्परागत, असत्य, अपरिपक्वता का मापदंड मानकर पत्र में अशोभनीय भाषा का प्रयोग किया है । आपने अपनी योग्यता का पूर्णरूपेण परिचय दिया है ।

कोई भी शास्त्रचर्चा सभ्य भाषा का प्रयोग अनुशासन की परिधि में रहकर होती है । विद्वान् परिपक्वता का परिचय है, न कि अश्लील भाषा का । अस्तु ।

आपने जिस प्रकार से शिक्षा ग्रहण की है तथा स्वयंभू विद्वान घोषित कर आपने अपने पत्राचार के माध्यम से परिचय देकर आपने स्वयं की छवि प्रस्तुत की है ।

हम शंकरदिग्विजय के मठाम् न्याय के द्वारा आपके ज्ञान के लिये शास्त्रमर्यादा प्रेषित कर रहे हैं ।

परस्परविभागे तु प्रवेशो न कदाचन ।
परस्परेण कर्तव्या आचार्येण व्यवस्थितिः ।

(महानुशासनम्)

एक एवाभिषेच्यः स्यादन्ते लक्षणसम्मतः ।
तत्तत्पीठे क्रमेणैव न बहु युज्यते क्वचित् ।

हमको आपके पूर्वाज्ञान से परिचय प्राप्त हो गया है , कि आप धृतराष्ट्र की भांति शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन न करके, तर्क-वितर्क और अमर्यादित परम्पराओं का पालन करते हैं ।

इसलिये आपसे शास्त्रार्थ करने का कोई औचित्य नहीं बनता है ।

दृष्टान्त के अनुसार विवेकशील व्यक्ति दल-दल को देखकर उसमें अपना पैर नहीं भसाते । विवेकपूर्ण व्यक्ति शास्त्रीय मर्यादाओं का पालन करने वाले सन्यास धर्म की मर्यादाओं की परिधि में ज्येष्ठ सन्यासियों से अल्प अवधि के सन्यासी को किसी के कहने पर अमर्यादित आचरण नहीं करना चाहिये ।

हमने अपना पक्ष (विषय) रखकर आपको अवगत करा दिया है , और आपकी योग्यता का मूल्यांकन भी कर लिया है । आपने अशिष्ठ भाषा का प्रयोग कर स्वयं के स्वरूप को वर्णित किया है ।ऐसी भाषा जो स्वयंभू विद्वान श्री गोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज की लेखनी और मानसिक चिन्तन को प्रदर्शित करती है । आपने अशिष्ट , अनैतिक शैली को टाइप कर आधुनिक सुविधा द्वारा प्रदर्शन किया है । हमने भी टाइप द्वारा उत्तर प्रेषित किया है, और दे रहे हैं ।

अभी आपकी चातुर्मास की अवधि कम है तथा अद्वैत सिद्धान्तानुसार केवल ब्रह्मचिन्तन ही एकमात्र सन्यास का स्वरूप है । न कि अनर्गल अलाप करना ।

हम आपसे ऐसी आशा करते हैं कि आप परिपक्वता शास्त्रीय परम्पराओं का भलीभांति पालन करके अविवेक रूपी बुद्धि में तर्क वितर्क का त्याग कर ब्रह्मचिन्तन करें ।

हमारे पास व्यर्थ की बातों के लिये समय का अभाव है । अतः अब आपको पर्याप्त शास्त्रार्थ औषधि दे दी गई है । इसका अधिक सेवन करोगे तो बुद्धि और दृष्टि में दोष उत्पन्न हो जायेगा । हम शंकरदिग्विजय के मठाम् न्याय द्वारा 'परिशिष्ट प्रथम' पृष्ठ संख्या ५३६, ५३९ पर ज्योतिष्पीठ शारदापीठ पर लिखित बातों को अवलोकनार्थ करने के लिये भेज रहे हैं ।

इति शुभं भूयात् ।

विशेष -

"इस पत्र के उत्तर में पुनः स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती जी के द्वारा अग्रांकित पत्र संस्कृत भाषा में भेजा गया । ध्यान रखने वाली बात है कि गोविन्दानन्द जी के संस्कृत में भेजे गये पत्रों का उत्तर स्वामी अच्युतानन्द हिन्दी में देते हैं । क्या इसी से उनके संस्कृतभाषा में अनभिज्ञ होने का प्रमाण नहीं मिल जाता ? संस्कृत भाषा तो क्या उनके द्वारा भेजे गये हिन्दी पत्र का अवलोकन करने से तो यह भी पता चल ही जाता है कि उन्हें हिन्दी भाषा का भी ठीक से ज्ञान नहीं है ।"

।। श्री शङ्कराचार्यो विजयते ।।

सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायाक्लिष्टकारिणे ।
नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे ।।

पूज्य दण्डी स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ, हरिद्वार

भो स्वामिन् !! ''ॐ हरिः'' !!

हस्ताक्षर रहितं हिन्दीभाषामयं बह्वबद्धशब्दजटिलं भावत्कं पत्रं समध्यगमम् ।

(१) ''भूमा'' शब्दः साधित इति आत्मानं धन्यं मन्यसे । पश्य ''भूमा'' शब्दः लोके सृष्ट्यारम्भे एव सिद्ध एव विद्यते । सिद्धस्य साधनं महते दोषाय स्यात् ।

वस्तुतःप्रकृते अस्माकं विचारणीयोंऽशःविवादास्पदश्च विषयः ''भूमा''पीठ शब्दः भवति न वेति । अस्माभिः सप्रमाणं सोदाहरणञ्च न्यरूपि । यद्भूमविद्येतिवत् भूमपीठ इति भवति नान्यथेति । भवतोच्यते **''नामैकदेश ग्रहणे नामग्रहणम्''** इति न्यायात् तथा **'' ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः''** इति न्यायाच्च स्वाभीष्टरूपसिद्धिरिति । तत् पदशः अक्षरशश्च शास्त्रासङ्गतमिति कृत्वा खण्डितमासीत् । अथाऽपि त्वं पुनःपुनर्वदसि व्यर्थं, मयासाधित मिति । नह्युक्तं त्वया द्वयोः ''भूमा'' + ''पीठ'' शब्दयोः समासविधायकं शास्त्रम् ।

(२) भवता स्वपत्रेषु विचार्यविषयस्य विचारणमकृत्वा अस्मत्पत्रेषु प्रतिपादितस्य विषयस्य शास्त्रतो युक्तितो वा खण्डनमकृत्वा विषयान्तरं प्रस्तोस्यसि । भवत्पराजयस्य इदमेव विषयान्तरकरणं मुख्यं प्रमाणम् ।

(३) नापृष्टःकस्यचित् ब्रूयात् इति धर्मशास्त्र मर्यादामुल्लङ्घ्य मम धर्मान् उपदेष्टुं प्रयतसि। सर्वप्रथमं त्वया स्वकीयो धर्मः सम्यक्स्वगुरुभ्यः अथवा तत्तुल्येभ्यः आहोस्वित् सर्वज्ञेभ्यः जगद्गुरुभ्यः शङ्कराचार्येभ्यः सकाशात् वा सविनयं श्रद्धाभक्तिपूर्वकं संसेवनशीलेन विज्ञेयस्तदनु सम्यगनुष्ठेयः। एतत् सर्वं परित्यज्य परोपदेशे पाण्डित्यप्रकटनं किमर्थं व्यर्थं प्रकुरुषे? मया मामकीना धर्माः अस्मद्गुरुभ्यः विज्ञायन्ते, यथावदनुष्ठीयन्ते च । अस्मिन्ननुष्ठाने एव अनिवार्यतया समापतितः उत्पथं प्रतिपन्नस्य ते प्रशिक्षणं मम । त्वया अन्यस्य उपदेशकरणात् प्रागात्मनः चरितं विचारणीयमस्ति। भवता ये शङ्कराचार्याःविमृश्यन्ते । ते भवदायुष्परिमाणापेक्षया समधिकचातुर्मास्यानुष्ठासम्पन्नाः । इमं विषयं पृष्ठतः कृत्वा तानन्यायेन असम्बद्धप्रलापैः असकृत् स्वच्छन्दं विमर्शयसे । माञ्च वदसि, चातुर्मास्यज्येष्ठान् अस्मान् त्वं पुरस्कुर्विति । नादत्तमुपतिष्ठत इति न्यायो महान् जागर्ति। यदि त्वया पूज्या न पूज्यन्ते तं त्वां शास्त्रमर्यादोल्लङ्घिनं स्वच्छन्दसञ्चारिणं कोऽवा किमर्थं वा पूजयेत् ?

कस्माद्धेतोः त्वमपेक्षसे पूजाम् ।

(४) मामुपदिशसि त्वं सर्वथा ब्रह्मात्मविचारनिष्ठो भवेःइति, बाढम् । अत्रोदेति प्रश्नः त्वं सदात्म निदिध्यासनापरस्सन् मामुपदिशसि ? अथवा बाह्यविषयलम्पटःसन् उपदिशसि ? अतो व्यर्थप्रलापं परित्यज्य भवदारब्धस्य पत्राचारस्य समाप्तिर्यथा स्यात् तन्मार्गमन्विष्य धन्यतां व्रज ।

(५) अश्लीलभाषणं न कर्त्तव्यमिति यच्छिक्षयसि मां तत्रात्मानं विचारय त्वत्पत्रेषु किं गणयितुं शक्यन्ते अपशब्दाः ? अगणितानपशब्दान् प्रयुञ्जानस्त्वं वदसि । अपशब्दोच्चारणं मा कुरु इति । स्थालीपुलाकन्यायेन एकमपशब्दमुदाहरिष्यामि ते । ''सामर्थ्यता'' त्वया विलखितमस्ति । अयं शब्दः कथं भवति साधीयान् ? समर्थस्य भावो हि सामर्थ्यम् । पुनः सामर्थ्यपदात् तल्प्रत्ययः कस्माच्छास्त्रात् आगच्छति ? अतो न बहुप्रलापः कार्यस्त्वया ।

(६) असकृत् त्वत्पत्रेषु इदं दृश्यते यत् शङ्करदिग्विजय-मठाम्नायमहानुशासनमिति । भ्रान्तोऽसि त्वम् । शङ्करदिग्विजयस्य महानुशासनस्य च कस्सम्बन्धः ? शङ्करदिग्विजयः अनेकेषु कालेषु अनेकैराचार्यैः प्रणीतः । तत्र च अन्यतमः विद्यारण्यस्वामिभिर्विरचितः अस्यां परिस्थितौ शङ्करभगवत्पादैः प्रणीतस्य मठाम्नायमहानुशासनस्य तत्पश्चात् कालीन विद्वद्भिः विरचितस्य शङ्करदिग्विजयस्य कस्सम्बन्धः। पुनः पुनः त्वमिमां भ्रान्तिमपरित्यज्यैव विनिर्दिशसि शङ्करदिग्विजयमठाम्नाय-

महानुशासनमिति ।

(७) यत्त्वयोक्तं ते सर्वे चतुराचार्येत्यादि तत्र ते किमाशयः ? न स्पष्टयसि त्वदीयमाशयं भवल्लेखे । वस्तुतत्त्वमहं ब्रवीमि । चतुर्णां मठानां ये निर्दिष्टा अंशाः देवः, देवी,गोत्रं,वेदः,महावाक्यं,

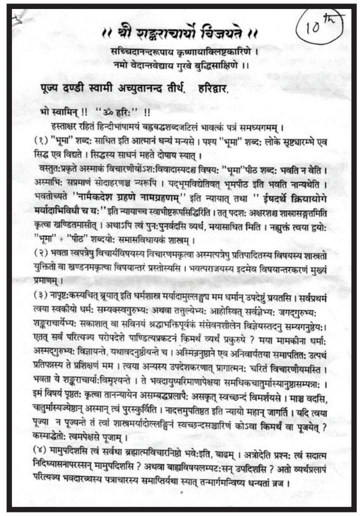

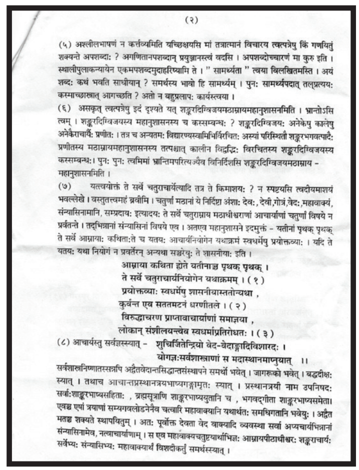

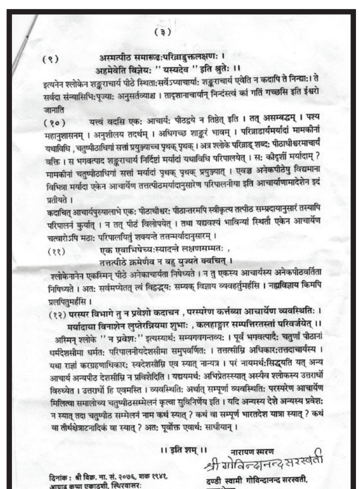

संन्यासिनामानि, सम्प्रदायः इत्यादयः ते सर्वे चतुराम्नाय मठाधीश्वराणां आचार्याणां चतुर्णां विषये न प्रवतन्ते । तद्भिन्नानां संन्यासिनां विषये एव । अतएव महानुशासने इदमुक्तं – यतीनां पृथक् पृथक् ते सर्वे आम्नायाः कथिताःते च यतयः आचार्यनियोगेन यथाक्रमं स्वधर्मेषु प्रयोक्तव्याः । यदि ते यतयः यथा नियोगं न प्रवर्तेरन् अन्यथा सञ्चरेयुः ते शासनीयाः इति ।

(१)आम्नाया कथिता ह्येते यतीनाञ्च पृथक् पृथक् । ते सर्वे चतुराचार्यनियोगेन यथाक्रमम् ।

(२) प्रयोक्तव्याः स्वधर्मेषु शासनीयास्ततोन्यथा । कुर्वन्त एव सततमटनं धरणीतले ।

(३) विरुद्धाचरण प्राप्तावाचार्याणां समाज्ञया, लोकान् संशीलयन्त्वेव स्वधर्माप्रतिरोधतः।

(८) आचार्यस्तु सर्वज्ञस्स्यात् –

शुचिर्जितेन्द्रियो वेद-वेदाङ्गादिविशारदः ।
योगज्ञःसर्वशास्त्राणां स मदास्थानमाप्नुयात् ।।

सर्वशास्त्रनिष्णातस्सन्नपि अद्वैतवेदान्तसिद्धान्तसंस्थापने समर्थो भवेत् । जागरूको भवेत्। बद्धदीक्षः स्यात् । तथाच आचान्तप्रस्थानत्रयभाष्यगङ्गामृतः स्यात् । प्रस्थानत्रयी नाम उपनिषदः सर्वाःशाङ्करभाष्यसहिताः, ब्रह्मसूत्राणि शाङ्करभाष्ययुतानि च, भगवद्गीता शाङ्करभाष्यसमेता। एवञ्च एषां त्रयाणां सम्यगवलोडनेनैव चत्वारि महावाक्यानि यथार्थतः समधिगतानि भवेयुः । अद्वैत मतञ्च शक्यते स्थापयितुम् । अतः पूर्वोक्त देवता वेद वाक्यादि व्यवस्था सर्वा अप्यचार्यभिन्नानां संन्यासिनामेव, नत्वाचार्याणाम् । स एव महावाक्यचतुष्टयार्थाभिज्ञः आम्नायपीठाधीश्वरः शङ्कराचार्यः सर्वेभ्यः संन्यासिभ्यः महावाक्यार्थं विशदीकर्तुं समर्थस्स्यात् ।

(९) अस्मत्पीठ समारूढःपरिव्राडुक्तलक्षणः । अहमेवेति विज्ञेयः '' यस्यदेव '' इति श्रुतेः ।।

इत्यनेन श्लोकेन शङ्कराचार्य पीठे स्थिताःसर्वेऽप्याचार्याः शङ्कराचार्य एवेति न कदापि ते निन्द्याः। ते सर्वदा संन्यासिभिःपूज्याः अनुसर्तव्याश्च । तादृशानाचार्यान् निन्दंस्त्वं कां गतिं गच्छसि इति ईश्वरो जानाति

(१०) यत्त्वं वदसि एकः आचार्यः पीठद्वये न तिष्ठेत् इति । तत् असम्बद्धम् । पश्य महानुशासनम् । अनुशीलय तदर्थम् । अधिगच्छ शाङ्करं भावम् । परिव्राडार्यमर्यादां मामकीनां यथाविधि , चतुष्पीठाधिगां सत्तां प्रयुञ्ज्याच्च पृथक् पृथक् । अत्र श्लोके परिव्राड् शब्दः पीठाधीश्वरमाचार्यं वक्ति । स भगवत्पाद शङ्कराचार्य निर्दिष्टां मर्यादां यथाविधि परिपालयेत् । सः कीदृशीं मर्यादाम् ? मामकीनां चतुष्पीठाधिगां सत्तां मर्यादां पृथक् पृथक् प्रयुञ्ज्यात् । एवञ्च

अनेकपीठेषु विद्यमाना विभिन्ना मर्यादा एकेन आचार्येण तत्तत्पीठमर्यादानुसारेण परिपालनीया इति आचार्याणामादेशेन इदं प्रतीयते ।

कदाचित् आचार्यपुरुषालाभे एकः पीठाधीश्वरः पीठान्तरमपि स्वीकृत्य तत्पीठ सम्प्रदायानुसारं तस्यापि परिपालनं कुर्यात् । न तत् पीठं विलोपयेत् । तथा यद्यवश्यं भाविन्यां स्थितौ एकेन आचार्येण चत्वारोऽपि मठाः परिपालयितुं शक्यन्ते तत्तन्मर्यादानुसारम् ।

(११) एक एवाभिषेच्यःस्यादन्ते लक्षणसम्मतः ,तत्तत्पीठे क्रमेणैव न बहु युज्यते क्वचित् ।

श्लोकेनानेन एकस्मिन् पीठे अनेकाचार्यता निषेध्यते । न तु एकस्य आचार्यस्य अनेकपीठवर्तिता निषिध्यते । अतः सर्वमप्येतत् त्वं विद्वद्भ्यः सम्यक् विज्ञाय व्यवहर्तुमर्हसि । नह्यविज्ञाय किमपि प्रलपितुमर्हसि ।

(१२) **परस्पर विभागे तु न प्रवेशो कदाचन , परस्परेण कर्त्तव्या आचार्येण व्यवस्थितिः ।**
मर्यादाया विनाशेन लुप्तेरन्नियमा शुभाः , कलहाङ्गार सम्पत्तिरतस्तां परिवर्जयेत् ।।

अस्मिन् श्लोके **'' न प्रवेशः''** इत्यस्यार्थः सम्यगवगन्तव्यः । पूर्वं भगवत्पादैः चतुर्णां पीठानां धर्मदेशसीमा धर्मतः परिपालनीयदेशसीमा समुपवर्णितः । तत्तत्सीम्नि अधिकारःतत्तदाचार्यस्य। यथा राज्ञां करग्रहणाधिकारः स्वदेशसीम्नि एव स्यात् नान्यत्र । परं नायमर्थःसिद्ध्यति यत् अन्य आचार्य अन्यपीठ देशसीम्नि न प्रविशेदिति । यद्ययमर्थः अभिप्रेतस्स्यात् अस्यैव श्लोकस्य उत्तरार्धो विरुध्येत । उत्तरार्धो हि एवमस्ति । व्यवस्थितिः अर्थात् सम्पूर्णा व्यवस्थितिः परस्परेण आचार्येण मिलित्वा समालोच्य चतुष्पीठसम्मेलनं कृत्वा सुविनिर्णेय इति । यदि अन्यस्य देशे अन्यस्य प्रवेशः न स्यात् तदा चतुष्पीठ सम्मेलनं नाम कथं स्यात् ? कथं वा सम्पूर्ण भारतदेश यात्रा स्यात् ? कथं वा तीर्थक्षेत्राटनादिकं वा स्यात् ? अतः पूर्वोक्त एवार्थः साधीयान् ।

।। इति शम् ।।

नारायणस्मरण
– दण्डी स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती
पम्पाक्षेत्रम्
दिनांक : श्रीविक्र, ना, सं. २०७६, शक १९४१
आषाढ कृष्ण एकादशी, स्थिरवासरः
२९ जून २०१९ वर्तमानं स्थलम् – हरिद्वार

(संस्कृत भाषा में उत्तर न मिलने पर हिन्दी में एक पत्र स्वामी गोविन्दानन्द जी ने भेजा। जिसका उत्तर स्वामी अच्युतानन्द की ओर से अभी तक नहीं आया है । पत्र इस प्रकार है–)

आपने अपने पत्रों में जो हमारी ओर से उत्तर भेजा गया था उसका उद्धरणपूर्वक खण्डन न करके विषयान्तर किया है और हमें संन्यास के धर्म का उपदेश देकर विचार को समाप्त करना चाहते हैं । उपदेश देने के पहले स्वयं भी उसका आचरण करके दिखाना चाहिए । क्या आपने शङ्कराचार्यों की आलोचना करके चातुर्मास्य का ध्यान रखा है ? जहाँ तक मठाम्नाय महानुशासन का प्रश्न है मठाम्नाय में एक श्लोक है – ते सर्वे चतुराचार्य –– जिसका अर्थ होता है – चारों मठों के संन्यासी अपने अपने आचार्य की आज्ञानुसार कर्त्तव्य पालन करें अन्यथा आचरण करने पर वे आचार्य उनको अनुशासित करें । किस मठ का कौन देवता है क्या महावाक्य है यह सामान्य संन्यासी के लिए है आचार्यों के लिए नहीं । जो अद्वैत सिद्धान्त के आचार्य हैं वे प्रस्थानत्रयी के अद्ययन अध्यापन में समर्थ होते हैं । प्रस्थानत्रयी का अर्थ है शाङ्करभाष्य सहित समस्त उपनिषद , शाङ्कर भाष्य सहित ब्रह्मसूत्र और शाङ्करभाष्य सहित भगवद्गीता । इनमें सभी महावाक्यों पर विचार किया गया है । जो जहां का आचार्य है वह केवल वहीं के महावाक्य का चिंतन करें यह नहीं कहा जा सकता । इसलिए सभी संन्यासियों को आचार्य ज्ञान प्रदान करने में समर्थ होते हैं । जहाँ तक भाषा की अश्लीलता का प्रश्न है आप हमारे संस्कृत में भेजे गये पत्र में कौन सा शब्द अश्लील है बतायें और अश्लीलता की परिभाषा भी बतायें । आपने हिन्दी में सामर्थ्यता शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है आप और आपके सहयोगी संस्कृत नहीं जानते । भाववाचक प्रत्यय के बाद पुनःभाववाचक प्रत्यय नहीं लगाया जाता । सामर्थ्य शब्द से ही जब अर्थबोध हो गया तो उसमें तल् प्रत्यय लगाने का क्या अभिप्राय है ? यह प्रयोग अशुद्ध है । मठाम्नाय महानुशासन में यह श्लोक है – **अस्मत्पीठ समारूढः परिव्राडुक्त लक्षणः** । अहमेवेति विज्ञेयो यस्य देव इति श्रुतेः। इसके अनुसार पीठासीन आचार्य स्वयं आदि शङ्कराचार्य का स्वरूप ही माना गया है । आपने महानुशासन के एक श्लोक – **एक एवाभिषेच्यस्स्यादन्ते लक्षणसम्मतः ।** तत्तत्पीठे क्रमेणैव न बहु युज्यते क्वचित् । एक पीठ में एक ही आचार्य होना यह एक पीठ में दो आचार्य का निषेध है दो पीठ में एक का नहीं , जबकि वहीं एक श्लोक है – परिव्राडार्यमर्यादो मामकीनां यथाविधि, चतुष्पीठाधिगां सत्तां प्रयुञ्ज्याच्च पृथक् पृथक् । – यहाँ परिव्राट कर्ता है और वह एकवचन है । प्रयुञ्ज्यात् क्रिया भी एकवचनान्त है जिसका अर्थ है क्रिया और कर्त्ता एकवचन के हैं । यहॉ परिव्राड आचार्य के लिए कहा गया है कि वह चारों पीठों की सत्ता का पृथक पृथक प्रयोग करे । पृथक पृथक करने का अर्थ है कि वह एक पीठ को दूसरे पीठ पर विलीन न करे । आवश्यकता पडने पर वह चारों पीठ का सञ्चालन कर सकता है । आपने शाङ्कर दिग्विजय का अंग परिशिष्ट के अनुसार मठाम्नाय महानुशासन को माना है जबकि आपको ध्यान होना चाहिए शाङ्कर दिग्विजय के कर्ता विद्यारण्य जी हैं और महानुशासन के निर्माता विद्यारण्य न होकर स्वयं

शङ्कराचार्य हैं । मूल शाङ्कर दिग्विजय में महानुशासन की चर्चा नहीं है यह एक स्वतंत्र मौलिक ग्रन्थ है । जहां तक परिशिष्ट का प्रश्न है बलदेव उपाध्याय के शाङ्कर दिग्विजय में और भी शाङ्कर दिग्विजय की चर्चा है जो परस्पर विरुद्ध है । सम्राट मण्डलीक नहीं होते आचार्य धर्मसम्राट होते हैं । आचार्य बनने के पूर्व उनकी योग्यता का परीक्षण हो जाता है बनने के बाद उनको शिक्षा देना अपराध है । सुधन्वा ने इसीलिए देवराज इन्द्र के उपचार से आचार्य को भूषित किया है जो महानुशासन में ही लिखा गया है ।

– स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती

(ब्रह्मचारी सहजानन्द जी ने भी उनके हस्तलिपि में लिखे पत्र के प्राप्त होने पर उसके उत्तर में यह पत्र लिख भेजा जिसका कोई उत्तर अभी तक नहीं मिला है ।)

आपके हस्ताक्षर का पत्र मिला है जिसमें यह लिखा है कि भूमापीठ का सञ्चालन स्वामी अच्युतानन्द जी कर रहे हैं इससे लगता है पत्र किसी और ने लिखा है हस्ताक्षर आपने किया है ।

आपने शास्त्रार्थ को मानसिक क्लेश बतलाया है जबकि शास्त्रचर्चा तो मानसिक क्लेश को दूर करने के लिए होता है ।

आपने छांदोग्य उपनिषद का यह वाक्य लिखा – भूमा वै सुखं नाल्पे सुखमस्ति । इसका अर्थ क्यों नहीं लिखा कि अनन्त अपरिच्छिन्न में सुख होता है अल्प या परिच्छिन्न में नहीं । और अपरिच्छिन्न का कोई आधार या अधिष्ठान नहीं होता जिसे पीठ शब्द से कहा जाय। आपने आगे नहीं पढा आप छांदोग्य में जिस भूमा की चर्चा कर रहे हैं उसको जानकर भी उपनिषद के आधार को परिच्छिन्न एवं संकीर्ण बना रहे हैं । यह वेद का अपमान है ।

आपने जिस पण्डित से यह लेख लिखवाया है उससे फिर पूछिए कि भूमापीठ में कौन सा समास है ? यदि समास है तो समस्यमान पद की विभक्ति का लोप होता है । ललितासहस्रनाम में भगवती का नाम भूमरूपा समस्तपद है । इसलिए भूमापीठ नहीं बन सकता है । यहॉ नञ् समास प्राप्त ही नहीं है । भूमा शब्द के साथ पीठ के स्थान में आकार कैसे होगा ?

अपने गुरु का नाम सादर लिया जाता है आपको लिखना चाहिए था स्वामी भूमानन्द तीर्थ पूरा नाम लिखना चाहिए था ।

आपने शङ्कर दिग्विजय का उदाहरण दिया है कि वह एकदेश है ऐसा नहीं है वहाँ शङ्कर शब्द सम्पूर्ण ही है इसलिए यह उदाहरण यहां नहीं लगेगा । जहां तक मठ या पीठ शब्द का प्रश्न है वहाँ कोई पौराणिक आधार होता है आपके यहाँ भूमापीठ की भूमि चम्पादेवी के द्वारा क्रय की

गई थी । वहाँ कोई देवस्थान नहीं था जिसे पीठ कहा जाय ।

आप कहते हैं चतुष्पीठ के देवता अलग–अलग हैं इसलिए दो पीठों का एक शङ्कराचार्य नहीं हो सकता आपका यह कथन सामान्य दण्डी संन्यासी के लिए है आचार्य के लिए नहीं । आचार्य तो मठाम्नाय महानुशासन के अनुसार आदिशङ्कराचार्य का स्वरूप ही है – **अस्मत्पीठ समारूढःपरिव्राडुक्तलक्षणः, अहमेवेति विज्ञेयो यस्य देव इति श्रुतेः ।।** मेरे पीठ पर अधिष्ठित उक्त लक्षण सम्पन्न संन्यासी मेरा ही स्वरूप है । इसलिए शृङ्गेरी के शङ्कराचार्य का योगपट्ट तीर्थ है, जबकि वहाँ सरस्वती होना चाहिए था । पुरी के निरंजनदेव स्वयं को तीर्थ कहते थे, जबकि वहाँ वन या अरण्य होना चाहिए । इसलिए आपकी यह बात नासमझी भरी है ।

शङ्कराचार्य जी का कश्मीर में विद्यमान जो सर्वज्ञपीठ है वहाँ आधिपत्य करना सेना का काम है । यह जगह पाक अधिकृत कश्मीर में है जहाँ जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत है। यह काम संन्यासियों का नहीं ।

आपने तुलसीदास का उदाहरण दिया है कि हनुमच्चालीसा होना था तो तुलसीदास जी ने हिन्दी में रामायण लिखी है वह तत्सम भाषा में है । पूर्णरूप से संस्कृत नहीं है । इसीलिए अतुलितबलधामं कहा गया है । लेकिन अगर आप स्वयं को पीठाधीश्वर लिखते हैं तो आपको संस्कृत का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि आप पीठाधीश्वर की हैसियत से ही तो शङ्कराचार्य को निर्देश दे रहे हैं ? आप संस्कृत नहीं जानते फिर भी यहां धृष्टता कर रहे हैं –

आपने अपने पत्र में लिखा है कि उक्त भूमापीठ पर अनेक महापुरुष हुए हैं जो वहाँ ब्रह्मसूत्रादि की चर्चा किया करते थे जो उस समय उस भूमि का सौभाग्य रहा किंतु अभी आप श्रीमान तो वहाँ कुत्ता की सेवा में लगे हुए हैं और उस भूमि को संकीर्ण बनाकर कलंकित कर रहे हैं ।

आपने चातुर्मास्य का नाम लेकर शास्त्रार्थ को टालने की चेष्टा की है यह आपकी पराजय का द्योतक है । शास्त्रार्थ में तो तत्काल उत्तर न देना निग्रहस्थान माना जाता है ।

आपने शब्द के जिस अनेकार्थ की बात की है तो यह सिद्धान्त है – **सकृदुच्चरितश्शब्दः सकृदेव अर्थं गमयति ।** अर्थात् एक बार उच्चरित शब्द एक ही अर्थ को बतलाता है अनेकार्थ को नहीं ।

२२.६.२०१९ **– ब्रह्मचारी सहजानन्द**

उक्त दोनों महानुभावों द्वारा प्रेषित पत्रों का कोई उत्तर न मिलने, संस्कृत पत्रों का हिन्दी में उत्तर देने, हिन्दी पत्रों में भी अनेक अशुद्धियों के होने, सामने शास्त्रार्थ की चुनौती के विद्यमान रहने पर भी हरिद्वार के कुम्भ के समय शास्त्रचर्चा का लाभ लेने जैसी बचकानी और पलायनवादी बात करने और विषय पर एक शब्द न बोल विषयान्तर करते रहने से यह निश्चय हो गया कि स्वामी अच्युतानन्द को लेशमात्र भी शास्त्रज्ञान नहीं है । उन्होंने जितने भी पत्र लिखे उसमें कई बार मठाम्नाय को मठाम् न्याय लिखने से यह प्रतीत हो गया कि उनकी शास्त्र तो क्या अक्षर से भी भेंट नहीं है । हमें पक्का विश्वास है कि जो पत्र हस्तलिपि में आया है वह भी उनकी अपनी हस्तलिपि नहीं है अपितु किसी और से लिखवाया गया हैं । यही नहीं हस्ताक्षर भी किसी और से ही करवाया गया है ।

हम उनके पत्रों की लगभग प्रतिपद की गई अशुद्धियों की चर्चा क्या करें । पाठकों से यही निवेदन करना चाहेंगे कि जो व्यक्ति मठाम्नाय को मठाम् न्याय लिखता बोलता हो उससे आप और क्या अपेक्षा कर सकते हैं ?

कितना ही उचित होता कि ये दोनों सामने आकर अपने अज्ञान को स्वीकार करते और विद्वानों का साथ कर आर्षज्ञान को आत्मसात् कर पूज्य ज्योतिष्पीठ एवं शारदापीठ द्वारका के जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज की शरण में जीवन को सफल बनाते ।

प्रस्तुत पुस्तक के द्वारा सभी तथ्यों को यथावत रखते हुए जनता को सत्य से अवगत कराना ही इस प्रकल्प का उद्देश्य है ।

-ब्रह्मविद्यानन्द ब्रह्मचारी

– ० –

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा् कश्चित दुःख भाग्भवेत्।।

चार पीठो के चार शंकराचार्य ही सर्वमान्य हैं

आदि जगतगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार आम्नाय पीठों के सर्वमान्य जगत्गुरु शंकराचार्य

ज्योतिष पीठाधीश्वर (बदरिका आश्रम)

स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी

श्री श्रृंगेरी शारदा पीठाधीश्वर (श्रृंगेरी)

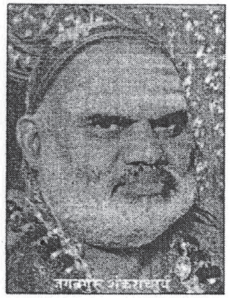

स्वामी श्री भारती तीर्थ जी

श्री गोवर्धन पीठाधीश्वर (पुरी)

स्वामी श्री निश्चलानंद जी

श्री शारदा पीठाधीश्वर (द्वारका)

स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी

अति प्राचीन सनातन धर्म के अनुसार चार पीठ द्वारका शारदा व ज्योर्तिपीठ, श्रृंगेरी एवं पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य क्रमशः स्वामी श्री स्वरूपानन्दजी, स्वामी भारतीयतीर्थ एवं स्वामी निश्चलानन्दजी है। हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों एवं उपनिषदों में इसका स्पष्ट उल्लेख है।

१. भारत का गजेटियर खण्ड १ भारत सरकार का आधिकारिक राजपत्र है। यह राजपत्र सर्वप्रथम १८८१ ई० में राजपत्र समिति के अध्यक्ष हण्टर द्वारा ब्रिटिश भारत साम्राज्य की ओर से प्रकाशित किया गया था। कालान्तर में भारत सरकार द्वारा इसका पुनः प्रकाशन १९६४ ई० में किया गया। उल्लिखित तथ्य है माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा बालाशंकर-महाशंकर भट्ट जी के प्रकरण में १९९५ में दिये गये निर्णय जो कि AIR 1995 SC 167 के अनुसार भारत का गजेटियर एक सत्य तथ्य के रूप में ग्राह्य है।

२. १८९६ ई० में द्वारका के ७३वें शंकराचार्य श्री राजराजेश्वर शंकराश्रम द्वारा प्रकाशित पुस्तक विमर्श में सार्वभौम राजा सुधन्वा का शासनादेश प्रकाशित किया गया था। सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ द्वारा पारित AIR 1963 SC 1638 के निर्णय के द्वारा सुधन्वा का वह शासनादेश विधि-बल रखता है और वह आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठों (श्री गोविन्द जी महाराज का प्रकरण) तिलकायत की व्यवस्था के लिए वैधानिक है, जिसमें दी गई व्यवस्थाएँ माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा मान्य हैं।

३. माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कृष्ण सिंह बनाम मथुरा अहीर का प्रकरण जो कि AIR 1980 SC 707 में प्रकाशित है – में कहा है कि आदि शंकराचार्य द्वारा प्रस्थापित ४ मठों (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम) के आचार्य ही जगद्गुरु शंकराचार्य कहलाते हैं।

४. माननीय पटना उच्च-न्यायालय ने OD No. 30 F 1931 में पारित 1936 के आदेश में यह निष्कर्ष दिया कि आदि शंकराचार्य ने ४ मठों की स्थापना की और इन मठों के अधिपति जगद्गुरु शंकराचार्य कहलाते हैं। जिनकी प्रभुता व्यापक रूप से हिंदू स्वीकार करते हैं। ये चारों मठ मठाम्नाय महानुशासन नामक ग्रंथ से शासित होते हैं। इसे समस्त हिंदू मठों का प्रमाणभूत शास्त्र मानते हैं।

५. भारत के द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णनन ने अपने दार्शनिक ग्रंथ भारतीय दर्शन जिसका आंग्लभाषा संस्करण १९२२ में प्रकाशित हुआ एवं हिन्दी में १९२८ में प्रकाशित हुआ। खण्ड २ में पृष्ठ 385 एवं 87 में यह उल्लेख है कि आदि शंकराचार्य जी ने ४ मठों की स्थापना की।

६. १८७५ ई० में लिखित सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ जिसके रचयिता आर्य समाज संस्थापक दयानंद सरस्वती थे उन्होंने लिखा आदि शंकराचार्य जी ने ४ मठों की स्थापना की, उनके ४ प्रमुख शिष्य ही उनके उत्तराधिकारी हुये आदि शंकराचार्य के कारण उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गई थी।

७. स्वामी प्रकाशानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक ट्रू हिस्ट्री में पृष्ठ 490, 91 पर लिखा है कि २५०० वर्ष पूर्व शंकराचार्य जी ने ४ मठों की स्थापना की।

८. ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तण्ड जो कि १८७९ ई० में श्री हरिकृष्ण शास्त्री द्वारा लिखा गया है, उसमें शंकराचार्य प्रादुर्भाव प्रकरण के अंतर्गत मठाम्नाय महानुशासन को भी प्रकाशित किया है जिसमें आदि शंकराचार्य द्वारा ४ मठों की स्थापना एवं उन मठों पर अभिषिक्त आचार्यों का उल्लेख है।

९. भारत सरकार द्वारा २००९ की जनगणना के अनुक्रम में प्रकाशित टेंपल ऑफ तमिलनाडु में शंकराचार्य जी का जन्मकाल ईसा पूर्व ५०० वर्ष माना है।

१०. १/५/१९७९ में श्रृंगेरी में आयोजित चारों पीठों के तत्कालीन शंकराचार्यों के चतुष्पीठ सम्मेलन में देश एवं धर्म की विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ। सम्मेलन में तत्कालीन चारों शंकराचार्यों का एक संयुक्त आशीर्वाद पत्र जो कि समग्र देशी की सनातनी जनता के लिए प्रकाशित होता है उसमें सभी शंकराचार्यों के हस्ताक्षर होते हैं। तत्कालीन ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दक्षिणाम्नाय श्रृंगेरी के अभिनव विद्यातीर्थ जी पूर्वाम्नाय पुरी पीठ के स्वामी निरंजन देवतीर्थ जी पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदा पीठ के अभिनव सच्चिदानंद तीर्थ जी के हस्ताक्षर एवं वह प्रपत्र देखा जा सकता है।

११. स्व० प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में साफ शब्दों में उल्लेख किया है कि आदि शंकराचार्य ने चार पीठों की ही स्थापना की थी।

१२. ४ मठों के जगद्गुरु शंकराचार्यों के अतिरिक्त यदि अन्य कोई व्यक्ति अपने को जनता के समक्ष जगद्गुरु शंकराचार्य प्रचारित प्रसारित करता है। श्रद्धालुओं को धोखे में रखकर प्रवंचना पूर्ण तरीके से भेंट, दक्षिणा, श्रद्धा, सम्मान प्राप्त करता है तो उसका यह कृत्य भारतीय दण्ड विधान की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत दण्डनीय अपराध माना जा सकता है जिसके फलस्वरूप उस व्यक्ति के ऊपर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा सकती है।

निवेदक : **जगद्गुरु शंकराचार्य चातुर्मास समारोह समिति** — सज्जन सराफ–अध्यक्ष — जनहित में प्रकाशनार्थ

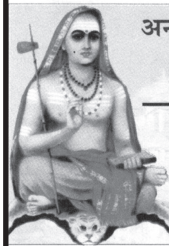

अनन्तश्रीविभूषित द्वारकाशारदापीठाधीश्वर एवं ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

श्रीशारदापीठम्
द्वारका, जामनगर, गुजरात
दूरभाष : 02892-235109

ज्योतिर्मठ
त्रोटकाचार्य गुफा, चमोली, गढ़वाल, उत्तराञ्चल
दूरभाष : 01389-222185

क्रमाङ्क :

श्रीमदाद्यशंकराचार्यो विजयतेतराम्

।। श्रीगुरुभ्यो नमो नमः।।

दिनाङ्क :

स्थल :

आचार्य संदेश

वेदान्त के द्वारा वेद्य उन "नरसिंह" नामक तेज की वन्दना करता हूं जिनका परमानन्दमय श्री विग्रह है, जिन्होंने अपनी इस विद्यारूप माया से द्वैत की कल्पना की है।

धर्म के संरक्षण के लिये अधर्म के उन्मूलन के लिये उस उस उचित काल में भूमि में भगवान् अवतीर्ण होकर सज्जनों का संरक्षण करते हैं दुर्जनों को दूर हटाते हैं सनातन आर्ष धर्ममार्ग की प्रतिष्ठा के द्वारा समस्त लोकों के कल्याण करने वाले परमात्मा हैं। ऐसा समस्त वेद, स्मृति, धर्मशास्त्र तथा इतिहासादि के द्वारा अच्छी तरह ज्ञात होता है।

लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भूलोक में बौद्धादि अवैदिक नास्तिक दुष्टमतों के प्रचार से मनुष्य अत्यन्त क्लेश ग्रस्त हो रहे थे तथा धर्म की ग्लानि हो रही थी, तब समस्त देवगणों से प्रार्थना किये जाने पर कैलासवासी समस्तजनों के हृदय में निवास करने वाले माता गौरी के सौभाग्य भगवान् शिव दक्षिणामूर्ति वटवृक्ष के मूल से चार सनकादि शिष्यों के साथ ही पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए।

मौनव्रत छोड़कर वटवृक्ष के मूल से बाहर आकर उन भगवान दक्षिणामूर्ति की शंकराचार्य रूपिणी मूर्ति अपने चार शिष्यों के साथ अवतीर्ण होकर भुवन में विचरण कर रही है –यथा–

मुक्त्वा मौनं वट विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती।।
शंभोर्मूर्तिश्चरति भुवने शंकराचार्यरूपा ।।

तदन्तर दक्षिणभारत में केरल प्रान्त में कालटी ग्राम में पूर्णानदी के किनारे माता आर्याम्बा और श्री शिवगुरु दम्पति के पुण्य भाग्यवशात् भगवान् शंकर शंकराचार्य रूप से प्रकट हुए।

बालक शंकर अल्पवयस् में ही सांगोपांग रहस्य वेदों को नियमानुसार अपने गुरु से प्राप्तकर विरक्त अन्तःकरण होकर ब्रह्म एवं आत्मज्ञान से संसार रूपी ग्राह से मुक्त हो गये उन्होंने अपनी श्री माता की आज्ञा से परिव्राड भाव प्राप्त करके नर्मदा नदी के समीप गोविन्दनाथ वन की गुहा में विराजमान अनेक शिष्यों के घिरे हुए श्री गोविन्दभगवत्पाद श्रीगुरु के सामने उपस्थित होकर सन्यास दीक्षा क्रम को प्राप्त किया और उनसे समस्त आत्म तत्त्व का विज्ञान प्राप्त किया।

उन्होंने ब्रह्मात्मभाव प्राप्त करके लोक को ज्ञान का संदेश देने के लिये भगवान् वेदव्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्रों पर शारीरकभाष्य लिखा, साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख निस्सरित भगवद्गीता पर भाष्य लिखा तथा अन्यान्य अनेक उपनिषदादि ग्रन्थों पर भाष्य लिखा और विभिन्न ग्रन्थ उपदेश साहस्री, अपरोक्षानुभूति, विवेक चूड़ामणि आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया विभिन्न स्तोत्रादि निर्मित कर अपने व्याख्यान द्वारा सप्रमाण वेद तात्पर्य को निरूपित किया। उस समय फैले हुए लोक कण्टक अनेक दुर्मतों का जड़ सहित समुन्मूलन किया। जिसे समस्त आस्तिक धार्मिक जन अच्छी तरह जानते हैं।

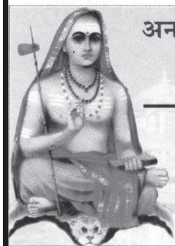

अनन्तश्रीविभूषित द्वारकाशारदापीठाधीश्वर एवं ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

श्रीशारदापीठम्	ज्योतिर्मठ
द्वारका, जामनगर, गुजरात	त्रोटकाचार्य गुफा, चमोली, गढ़वाल, उत्तराञ्चल
दूरभाष : 02892-235109	दूरभाष : 01389-222185

क्रमाङ्क :

दिनाङ्क :

स्थल :

वेदों के महातात्पर्य के रूप अद्वैत तत्त्व मार्ग को सम्पूर्ण भारत में सभी के लिये उपदिष्ट कर काश्मीर में सर्वज्ञपीठ पर आरोहण कर भगवती शारदाम्बा से सर्वज्ञ ''उपाधि प्राप्तकर श्री भगवत्पाद जगद्गुरु शंकराचार्य जी ने अद्वैत-आत्म तत्व के संरक्षण के लिये और उसके प्रचार के लिये भारत देश की चार दिशाओं में चार आम्नाय मठों का निर्माण किया। उन चारों आम्नाय मठों में अपने दिव्य तेजस्वी चारों शिष्यों को अभिषिक्त कर प्रतिष्ठित किया। उन मठों के संचालक और परम्परा को आगे आने वाले समय में सुरक्षित बनाए रखने के लिए धार्मिक संविधान ''मठाम्नाय-महानुशासन'' नामक ग्रन्थ बनाया।

''मठाम्नाय-महानुशासन'' प्रथम स्थापना काल से वर्तमान काल तक समस्त धार्मिकजनों द्वारा व्यवहृत हो रहा है और जिसका समस्त सज्जन सन्मार्गस्थ संन्यासिजन समादर कर रहे हैं। उस ''मठाम्नाय-महानुशासन'' में यह श्लोक लिखा हुआ है कि-

अस्मत्पीठ समारूढः परिव्राडुक्त लक्षणः।
अहमेवेति विज्ञेयो यस्यदेव इति श्रुतेः।।

अर्थात् - हमारे द्वारा प्रतिष्ठित पीठ में उक्त लक्षणों वाला परिव्राजक (शुचि, जितेन्द्रिय, वेदवेदांगादि विशारद समस्त शास्त्रों के योग को जानने वाला मेरे इस स्थल को प्राप्त करे) मेरा ही रूप समझा जावे **''यस्य देव इति श्रुतेः''** इस वेद प्रमाण के आधार पर श्री आचार्य द्वारा स्थापित चारों आम्नाय पीठों में ही विद्यमान संन्यासी यथोक्त लक्षणों से युक्त होकर ही जगद्गुरु शंकराचार्य पद से स्वयं को अलंकृत कर सकते हैं लक्षणहीन अयोग्य संन्यासी नामधारी नहीं। यह विषय पूर्णरूप से विचार कसौटी में कसा हुआ सुसिद्ध ही है। आज भी दशनामा समस्त सन्यासीगण भी ''मठाम्नाय महानुशासन'' का समादर करते हैं और वे इन दशनामों को चारों पीठों से सम्बद्ध मानते हैं। इसलिये कोई चारों पीठों से अन्य संन्यासी, जगद्गुरु शंकराचार्य लिख या बोल नहीं सकता है। ऐसा समस्त धार्मिक-जन अच्छी तरह सूक्ष्मतया ज्ञात करके शंकराचार्यों की संन्यासियों की अधिकारानुसार सेवा करें।

यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।

जो लोग मुख्य आचार्य परम्परा से अन्यत्र अन्य में आचार्यत्व का आरोपकर पूजित करना चाहते हैं और श्रेय की अभिलाषा करते हैं तो वे मृग मरीचिकावत् रेगिस्तान में जल पाना चाहते हैं, अभ्युदय प्राप्ति के लिए चारों आम्नायपीठों में विधिपूर्वक प्रतिष्ठापित, उक्त सुलक्षणों से युक्त जगद्गुरु शंकराचार्य का पूजन, सत्कार प्रचार करना चाहिए। पूज्यपूजा व्यतिक्रम नहीं करना चाहिए ।

।। इति सर्वं शिवम् ।।

२०/०८/०९
अलीपुर,कोलकाता (प.बं.)

ब्रह्मचारी सुबुद्धानन्द
(निजी सचिव)
जगद्गुरु शंकराचार्य

श्रीहरि:

श्रीगणेशाय नम:

पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरी- ७५२००१, ओड़िशा, दूरभाष/फेक्स:- ०६७५२-२३१०९४

निज सचिव - स्वामीश्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती, मो-९४३७०३१७१६,९४३७००४७९५

Tele-Fax 06752 - 231094, Ph.- 231716, Mobile No :- 9437031716, 9437004795

ज्ञातव्य है कि श्रीशिवावतार भगवत्पाद-शङ्कराचार्य-महाभागके अनुसार मठ, आचार्य और व्रतचर्या चार ही हैं -

" मठाश्चत्वार आचार्याश्चत्वारश्च धुरन्धरा: ।
सम्प्रदायाश्च चत्वार एषा धर्मे व्यवस्थिति: ।। "

(मठम्नाय-महानुशासनम् ६५)

ऋग्वेदी पूर्वाम्नाय गोवर्द्धनमठ -पुरुषोत्तमक्षेत्र-पुरी, यजुर्वेदी दक्षिणाम्नाय शृङ्गेरी, सामवेदी पश्चिमाम्नाय शारदामठ -द्वारका और अथर्ववेदी उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठसे सम्बद्ध वन, अरण्य, सरस्वती, भारती, पुरी, तीर्थ, आश्रम, गिरि, पर्वत, सागर-ये दशनामी सन्यासी हैं ।

वैदिकवाङ्मय की रक्षा और अभिवृद्धि तथा धर्मनियन्त्रित-पक्षपातविहीन, शोषणविनिर्मुक्त शासनतन्त्रकी उद्भावना उक्त चतुराम्नायसे सम्बद्ध धर्माचार्योंका पवित्र दायित्व है ।

विगत कुछ वर्षोंसे सत्तालोलुप और अदूरदर्शी केन्द्रीय तथा विविध प्रान्तीय शासनतन्त्रोंके एवम् कतिपय दिशाहीन दुर्भावनायुक्त सामाजिक संस्थानोंके षड्यन्त्रसे देशमें चतुर्दिक् चतुष्पीठ,खण्डपीठ तथा कल्पित संस्थानों के नामसे शताधिक जगद्गुरु - शङ्कराचार्य ख्यापित किये जा रहे हैं । जिन्हें दिशाहीन शासनतन्त्र, सामाजिक संस्थान और व्यापारतन्त्रके द्वारा गोवंश, गङ्गा-आदि प्रशस्त सनातन मानबिन्दुओं की रक्षाके नामपर विश्वस्तरपर प्रोत्साहित किया जा रहा है ।

मानवताके पक्षधर देशभक्त तथा सनातन वैदिक-आर्य-मर्यादाके पोषक और अराजकताके दमनके पक्षधर महानुभावों का यह पवित्र दायित्व है कि स्वयं इस कुचक्रके चपेटमें न पड़ें तथा अन्योंको इस दुरभिसन्धिसे बचानेका यथोचित प्रयास अवश्य करें ।

निश्चलानन्दसरस्वती

प्रेषक

निश्चलानन्दसरस्वती

श्रीमज्जगद्गुरु -शङ्कराचार्य

१२.८.२००८

श्री श्री जगदगुरु शङ्कराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणाम्नाय, श्री शारदापीठम्, शृङ्गेरी

Sri Sri Jagadguru Shankaracharya Mahasamstanam

Dakshinamnaya, Sri Sharada Peetam, Sringeri.

V.R. GOWRI SHANKAR, BE, DIISc, MIMA,
CEO & Administrator
Sri Sringeri Math and its Properties, Sringeri - 577 139 (Karnataka - India)

Ref : Camp : Date :

S-18/ 3655 SRINGERI 3-Aug-09

TO WHOSOEVER IT MAY CONCERN

It is an acknowledged historical fact that Lord Parameshwara took birth as Adi Shankara at Kalady and did an yeoman service in resurrecting the practices of Sanatana Dharma and advaitha doctrine.

To continue the work that He started, Adi Shakiara established four Amnaya Peethas in four corners of our country. They are at Sringeri, Dwaraka, Badari and Puri. The peetadipathis of these four Amnaya Peethas are only the pontiffs who are addressed as Jagadguru.

It is also a historical fact that tills recently only these Amnaya Peethas were called as Mahasamsthanam.

Over a period of time in history many Maths got started for effectively propagating the work of Adi Shankara and all these Maths and Mathadhipathis are followers of Adi Shankara.

However a firm believer of Sanatana Dharma and follower of Adi Shankara will only accept what Adi Shankara laid out in His Mathamnayanushasanam and will address only the four Amnaya Peetadipathis as Jagadguru Shankaracharya and these later date Maths are not Mahasamsthanam.

(V R GOWRISHANKAR)

Phone Off.: 08265 - 250123 Resi. 08265 - 250192 Fax : 08265 - 250792 Bangalore Res. 080-28601696

सन् २००९ में स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती जी ने उनके पूर्वाश्रम में चातुर्मास के अवसर पर चारों पीठों के तीनों शङ्कराचार्यों से मिलकर चारों पीठों के बारे में अधिकृत पत्र प्राप्त किया ।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज विगत 40 वर्षों से ज्योतिष्पीठ एवं द्वारका शारदा पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य पद पर विराजमान हैं । सन् 1988 से वे द्वारका शारदा पीठ के भी जगद्गुरु शंकराचार्य हैं । प्रस्तुत दुर्लभ चित्रों से उनके धार्मिक अभियान का किंचित दिग्दर्शन हेतु यहाँ चित्र प्रस्तुत है -

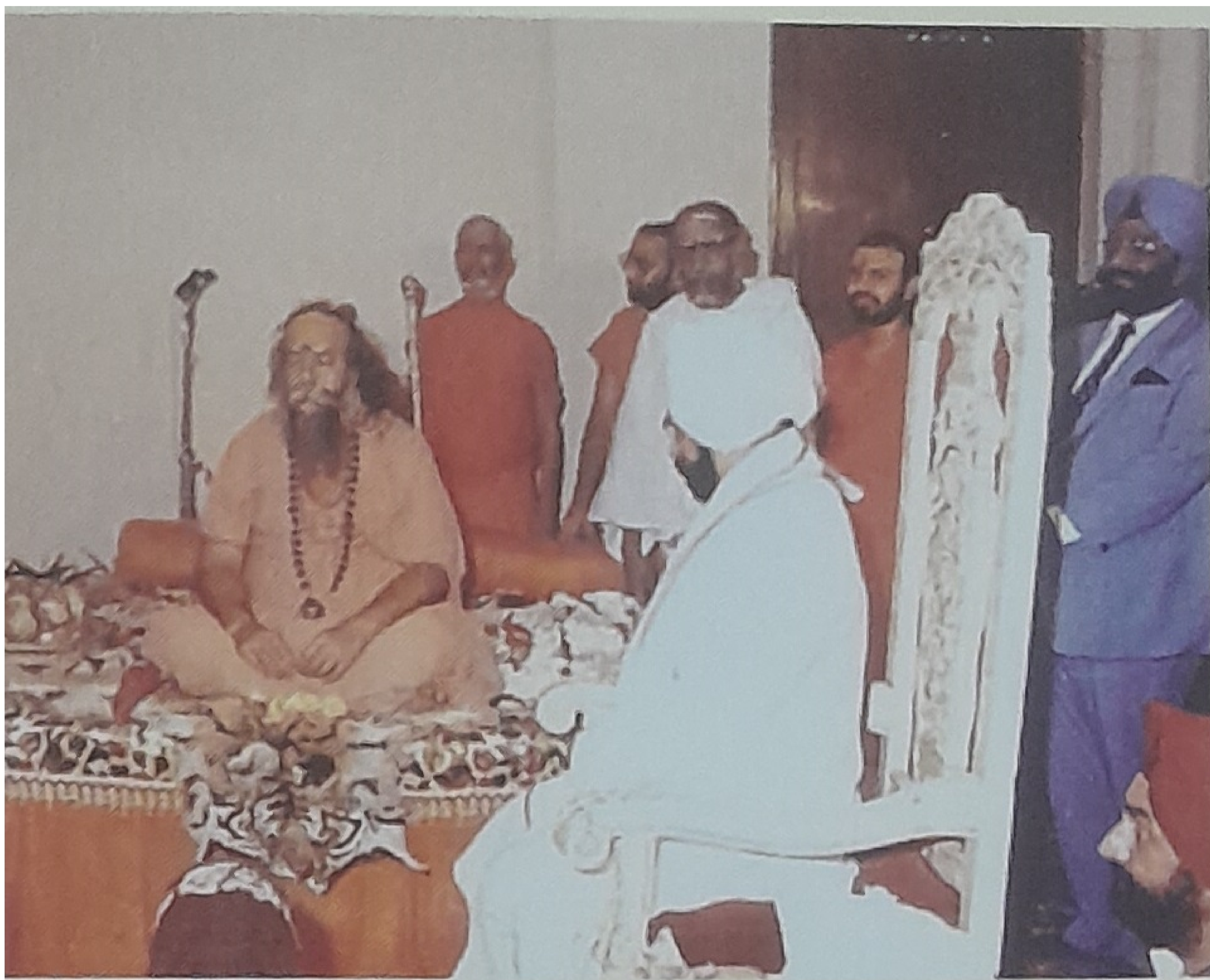

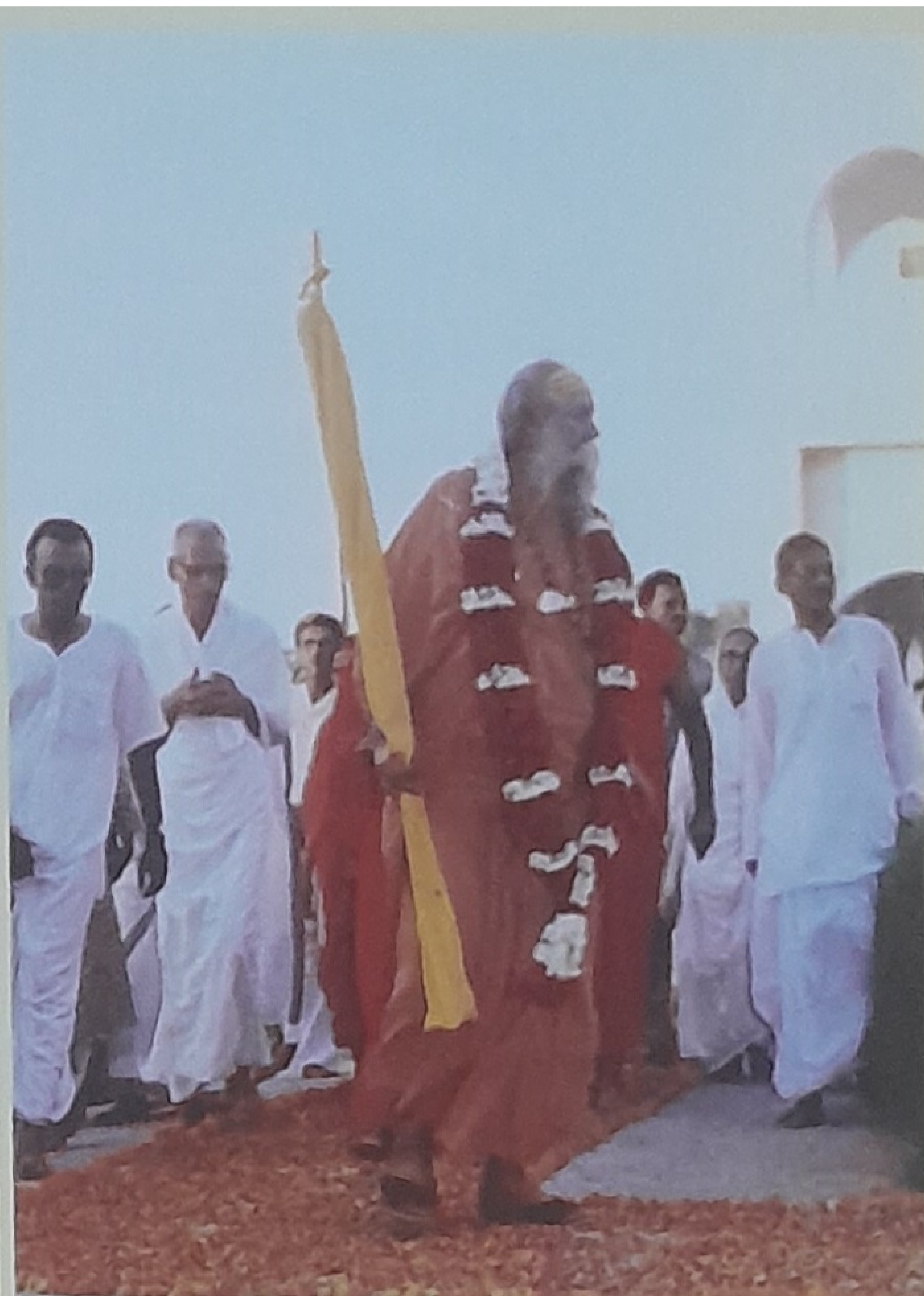

वेदान्तविचारगोष्ठी

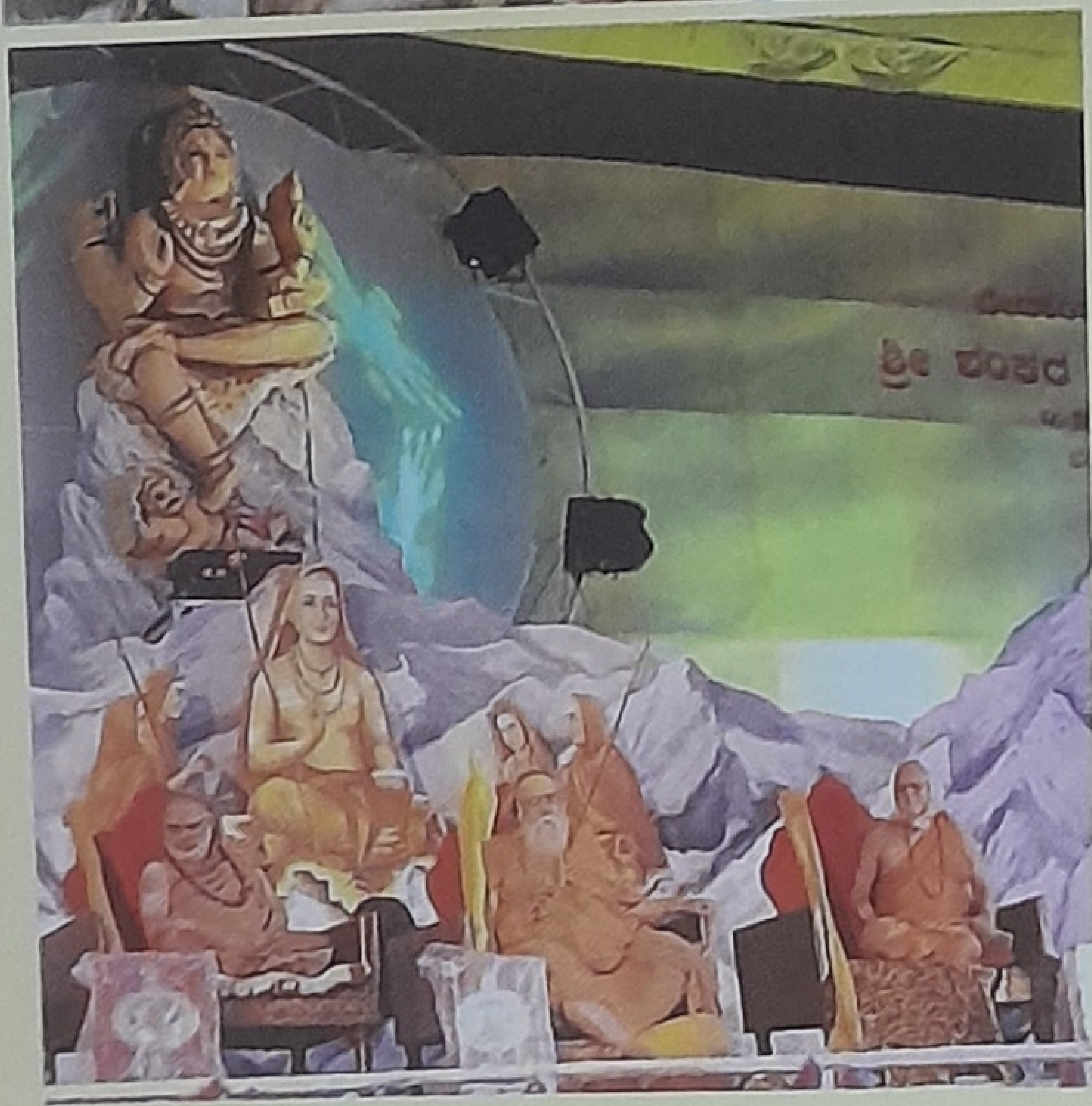

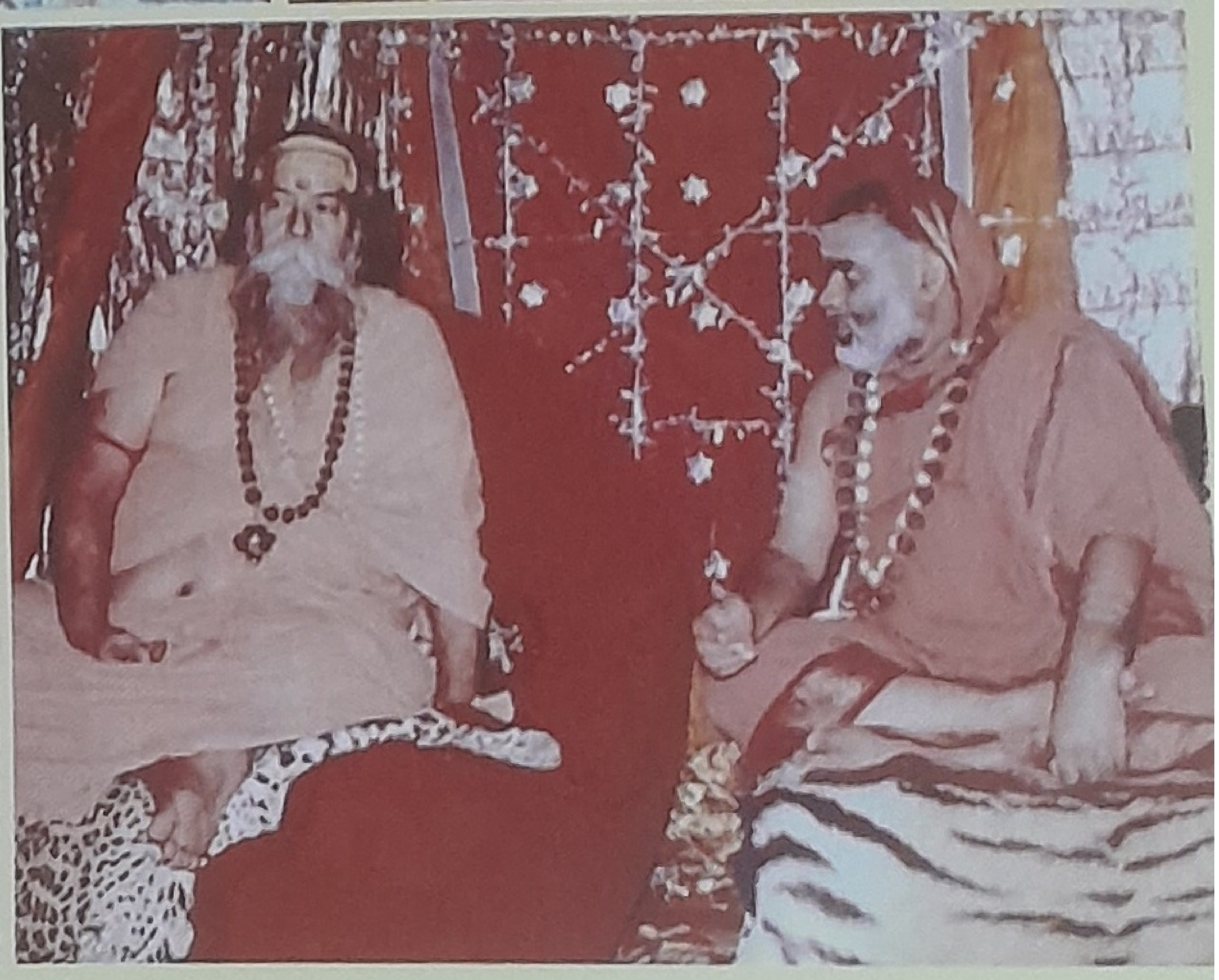

आदि शंकराचार्य द्वारा भारत की एकता और अखण्डता के लिये
आज से 2500 वर्ष पूर्व स्थापित चारों पीठों अनुसार भारत का भौगोलिक मानचित्र